ओ३म्

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

शांतिधर्मी

दिसम्बर, 2014

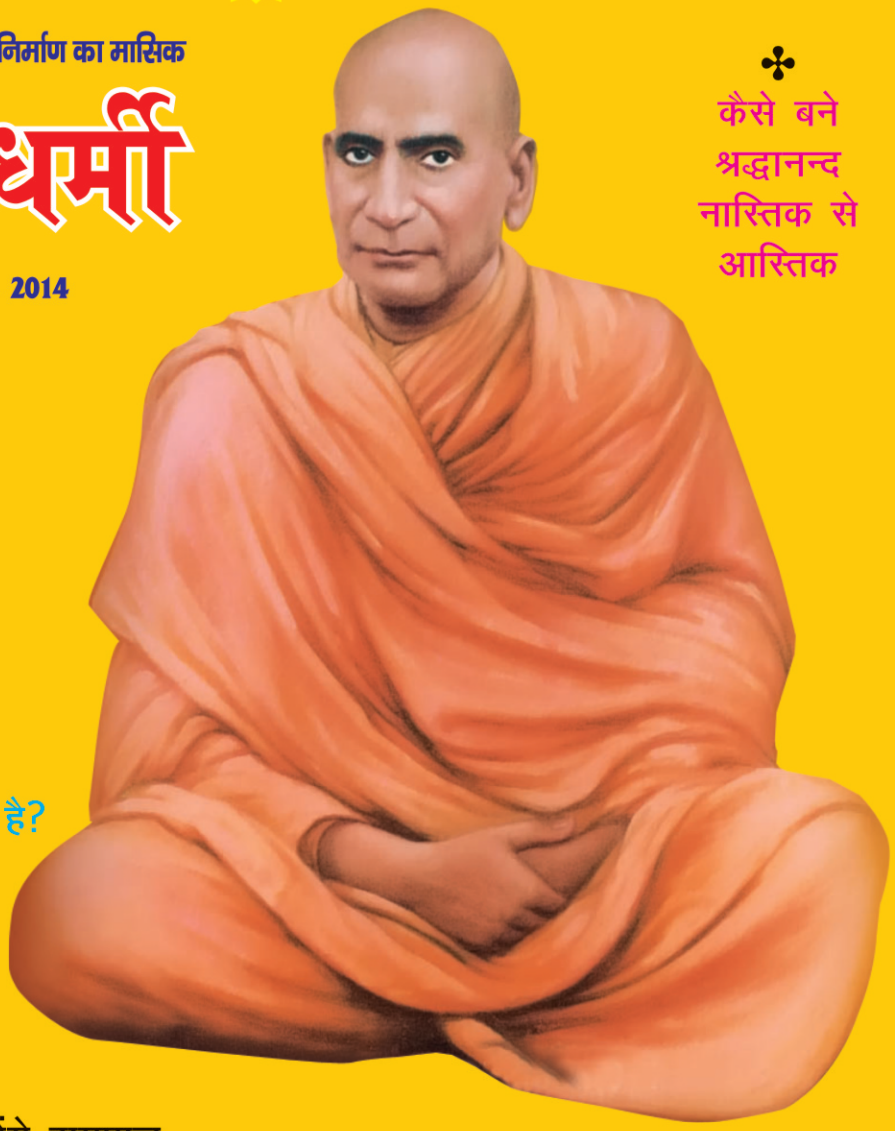

✣ कैसे बने श्रद्धानन्द नास्तिक से आस्तिक

❖ श्रद्धानन्द बलिदान की पृष्ठभूमि

❊ दो महात्मा और उनके हत्यारे

✦ काशी शास्त्रार्थ क्या आपको याद है?

❀ संस्कृत का विरोध क्यों

✣ कब तक उगते रहेंगे रामपाल

विशेष भेंट :- ब्रह्म यज्ञ वैदिक संध्या हिन्दी पद्यानुवाद

₹10

ओ३म्

वैदिक पथ के पथिक चौधरी मित्रसेन आर्य

जन्म 15 दिसम्बर 1930 **देहावसान 27 जनवरी 2011**

नहिं लेशमात्र अभिमान कहीं छूकर आकाश सफलता का।
पर्वत सी बाधाएँ लांघी कहीं नाम नहीं निर्बलता का।
धरती सा धैर्य रखा मन में नभ सी विशालता पाई थी।
अपना इतिहास रचा खुद ही अपनी ही राह बनाई थी।।

हजारों परिवारों के उद्धारक, आर्यसमाज के निष्ठावान अनुयायी, समाज–सुधारक कर्मयोगी, आर्य संस्थाओं के अनन्य सहयोगी, उदारमना दानवीर, यज्ञमय जीवन के प्रतीक, आत्मधन के धनी, परोपकारी दानशील, पारिवारिक, आध्यात्मिक और सामाजिक जीवन के आदर्श, ईश्वर विश्वासी, पुरुषार्थी, दृढ़ संकल्पी

चौधरी मित्रसेन आर्य का क्रियात्मक जीवन हम सबके लिए प्रेरणास्रोत है

ओ३म्

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा।

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

शान्तिधर्मी

दिसम्बर, २०१४

वर्ष : १६ अंक : ११ मार्गशीर्ष-पौष २०७१ विक्रमी
स ष्टि संवत्-१६६०८५३११५, दयानन्दाब्द : १६२

सम्पादक : चन्द्रभानु आर्य
(चलभाष ०८०५६६-६४३४०)
संयुक्त सम्पादक : सहदेव समर्पित
(चलभाष ०६४१६२-५३८२६)
उपसम्पादक : सत्यसुधा शास्त्री
प्रबंध संपादक : सुभाष श्योराण
आदरी सम्पादक : यज्ञदत्त आर्य
सह-सम्पादक : राजेशार्य आट्टा
डॉ० विवेक आर्य
नरेश सिहाग बोहल
सहयोग : आचार्य आनन्द पुरुषार्थी
श्रीपाल आर्य, बागपत
महेश सोनी, बीकानेर
भलेराम आर्य, सांघी
कर्मवीर आर्य, रेवाड़ी
विधि परामर्शक : जगरूपसिंह तंवर
कार्यालय व्यवस्थापक : रविन्द्रकुमार आर्य
कम्प्यूटर सज्जा : बिशम्बर तिवारी

मूल्य
एक प्रति : १०.०० रु.
वार्षिक : १००.०० रु.
आजीवन : १०००.०० रु.

कार्यालय :
७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक,
जीन्द–१२६१०२ (हरियाणा)
दूरभाष : ६४१६२–५३८२६
ई-मेल-shantidharmijind@gmail.com

प्रेरणा स्तम्भ

आंखें बंद करो, ज्ञान नेत्रों को बलपूर्वक खोलो और देखो उस अनन्त शक्ति को, जिसने तुम्हारी रक्षा के लिए हाथ पसार रखे हैं। चले जाओ पूर्ण विश्वास के साथ उसकी गोद में और तुम उस उत्तम अवस्था को प्राप्त हो सकोगे, जहां पर बुढ़ापे और मृत्यु का भय नहीं रहता। –स्वामी श्रद्धानन्द(धर्मोपदेश से)

क्या? कहाँ?....

आलेख
रष्ट्र रक्षा के छः आधार ६
नास्तिक मुंशीराम को श्रद्धानन्द बना दिया ११
स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदानः कारण और पृष्ठभूमि १४
दो महात्मा : मुंशीराम और गांधी १७
ब्रह्मयज्ञ : वैदिक संन्ध्या हिन्दी पद्यानुवाद १६
वेद के सर्वहितकारी उपदेश २२
गुणों से भरपूर है पत्ता गोभी २४
अर्श रोग २५
कहानी/प्रसंग :
सही चुनाव २७, क्या याद रखो-२७, स्वर्ग नरक-२७
प्रतिष्ठा/कल का भरोसा/लेखक का जन्म-२८ गधे की मजार-२६
कविताएँ- २१, २६
स्तम्भ-आपकी सम्मतियाँ ६, अनुशीलन, सोम सरोवर ७ चाणक्य नीति, अमृतवचनावली ८, बाल वाटिका २६, भजनावली ३०,
साथ में : समाचार सूचनाएँ, यह भी जानो,
काशी शास्त्रार्थ : क्या आपको याद है? -३४

वेद-विचार सामवेद आग्नेय पर्व

पद्यानुवाद : स्व० आचार्य विद्यानिधि शास्त्री

अप त्यं वृजिनं रिपुं स्तेनमग्ने दुराध्यम्।
दविष्ठमस्य सत्पते कृधी सुगम्।।१०५।।

दूर भगाओ हमसे प्रभु जी! पापी चोर कुटिल जन को।
दुष्ट अनिष्ट विगर्हित चिन्तन करने वाले दुर्जन को।।
श्रेष्ठों के पालक! तुम उसको शुभ पथ से अति दूर करो।
सुगम मार्ग उसका दुर्गम हो, छली शत्रु को नष्ट करो।।

पूर्ण सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। पत्रिका में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र जीन्द होगा।

शान्ति प्रवाह

❑चन्द्रभानु आर्य

संस्कृत का विरोध क्यों?

केन्द्रीय विद्यालयों में संस्कृत पढ़ाने के सरकार के निर्णय पर विचित्र बवाल उठ रहा है। जिस भारतवर्ष की मूलभाषा संस्कृत है और जिसका समस्त ज्ञान विज्ञान संस्कृत भाषा में निहित है, जो भाषा हजारों वर्ष तक साहित्य और जन संवाद की भाषा रही है, उसका आज परायों की तरह विरोध हृदय में एक विक्षोभ उत्पन्न करता है। संस्कृत विरोधियों की पीड़ा से ऐसा प्रतिध्वनित होता है जैसे कि संस्कृत पढ़ाने से उनकी दृष्टि में कोई जघन्य पाप हो जाएगा।

आखिर संस्कृत का विरोध करने के पीछे उनका उद्देश्य क्या है? वस्तुतः जिस मानसिकता के कारण संस्कृत विद्या आज विलुप्त होने के कगार पर आ पहुंची है, उसी मानसिकता के लोग संस्कृत के विकास की संभावना से भयभीत हैं। एक सुदीर्घ मुगल साम्राज्य संस्कृत को समाप्त नहीं कर सका, बल्कि उनमें दारा शिकोह जैसे व्यक्ति भी हुए जिन्होंने संस्कृत के गहन अध्ययन में रूचि ली। उन्नीसवीं शताब्दी के द्वितीय दशक तक भी भारतवर्ष में संस्कृत के पठन पाठन के लिए २०० व्यक्तियों पर एक गुरुकुल था। मैकाले के रूप में अंग्रेज ने इस भाषा को समाप्त करने के दुर्धर्ष प्रयत्न किए। संस्कृत भाषा और इसमें निहित विद्या को उपेक्षित करने का सबसे प्रभावशाली कार्य स्वतंत्रता के पश्चात् ही हुआ और इसमें सबसे बड़ा योगदान मैकाले और मार्क्स के मानस पुत्रों का रहा।

मैकाले के लिए संस्कृत विद्या का विरोध करना स्वाभाविक हो सकता है क्योंकि वह इस भाषा को समाप्त किए बिना अपनी भाषा का वर्चस्व स्थापित नहीं कर सकता था। अपनी भाषा की श्रेष्ठता सिद्ध किए बिना वह अपनी जातीय श्रेष्ठता सिद्ध नहीं कर सकता था। यदि अंग्रेजी और संस्कृत समानान्तर चलतीं तो यह सम्भव नहीं था क्योंकि इससे लोगों को तुलना करने का अवसर मिलता। इसलिए अंग्रेजी काल में संस्कृत के प्रचार के नाम पर भी जितने कार्य हुए वे संस्कृत को हीन सिद्ध करने के लिए ही हुए। बोडेन नाम के व्यक्ति ने अपना अथाह धन इसी कार्य के लिए दान किया था कि बौद्धिक छल द्वारा भारतीयों में संस्कृत और संस्कृत विद्या के प्रति हीनभावना उत्पन्न की जाए।

लेकिन मार्क्स के मानसपुत्र संस्कृत से अकारण द्वेष रखते हैं। संस्कृत को अपने आर्थिक सामाजिक एजेंडे में अकारण ही बाधा समझते हैं। भाषा का साम्यवाद और पूंजीवाद से कोई संबंध नहीं होता। संभवतः उनके विरोध का कारण यही है कि संस्कृत भाषा में उनके सामाजिक दृष्टिकोण से बेहतर विकल्प उपलब्ध हैं। जो लोग संस्कृत के विरोधी हैं वे संस्कृति के विरोधी भी हैं। वे वर्ण व्यवस्था को विकृत रूप में उपस्थित कर लोगों की भावनाओं से खेलते रहे हैं। वे ईश्वर, वेद, धर्म, पाप-पुण्य, स्वर्ग नरक की वैदिक अवधारणाओं को गलत रूप में प्रस्तुत करते रहे हैं। वे भारतीय परम्पराओं, मूल्यों और आदर्शों की गलत व्याख्या करते रहे हैं। इन सब व्यवस्थाओं के सत्य और यथार्थ स्वरूप संस्कृत के ग्रंथों में हैं। यदि संस्कृत विद्या पढ़ी जाएगी तो इनके दुष्प्रचार की हवा निकल जाएगी। संभवतः उनके संस्कृत विरोध का सबसे बड़ा कारण यही है। यह बौद्धिक आतंकवाद का अप्रतिम उदाहरण है।

एक मित्र ने पूछा- संस्कृत पढ़ने से क्या लाभ होगा? मैंने कहा- सबसे बड़ा लाभ तो यही होगा कि नित नए नए रामपाल पैदा नहीं होंगे। ऐसे लोग हवाला तो संस्कृत का ही देते हैं। जबकि संस्कृत न उनको आती है न उनके अंधभक्तों को। वे जो कुछ कह देते हैं वही उनके भक्तों के लिए प्रमाण होता है। रोज नए नए भगवान पैदा हो रहे हैं। कोई बीज मंत्र देते हैं, कोई शास्त्रों के प्रमाण देकर अपने आप को भगवान घोषित कर रहे हैं। यदि लोग स्वयं संस्कृत पढेंगे तो वे स्वयं शास्त्रों का अवलोकन कर सकेंगे। इस प्रकार जो लोग स्वयं अंधे हैं वे स्वच्छन्दता से लोगों को हांक नहीं सकेंगे। प्राचीन भारत में भी शास्त्रों के नाम पर जो अंधविश्वास और कुरीतियाँ प्रचलित हुई, उसका कारण यही था कि लोगों ने संस्कृत पढ़ना छोड़ दिया, और स्वार्थी लोगों ने आम लोगों को संस्कृत पढ़ाना प्रतिबंधित कर दिया।

मैंने अपने मित्र से कहा- कि मान लीजिये हमारे पूर्वजों की एक बहुत बड़ी पुरानी हवेली है। उसके अन्दर बहुत बड़ा खजाना बंद पड़ा है। हमारे प्रच्छन्न शत्रु-- हमारे मित्रों के रूप में हमें निरन्तर यह सलाह देते रहते हैं कि उसको खोलना मत। उसके अन्दर कुछ नहीं है, खोलने का कोई लाभ नहीं है। वे हमारे ऊपर दबाव बनाते रहे हैं। जब जब भी हम उसे खालने का प्रयास करते हैं तो वे मरने कटने को तैयार हो जाते हैं। हवेली खोलने से हमें यह लाभ होगा कि हमारे पास कोई अभाव नहीं रहेगा। हम ज्ञान विज्ञान के मामले में विश्व गुरु बन जाएँगे। हम धन के रूप में सोने की चिड़िया बन जाएँगे। उनकी यह हानि होगी कि जब हमें बिद्या का अकूत धन मिलेगा तो उनकी आयातित

विचारधाराएँ धूलि में मिल जाएँगीं। उनका आभामण्डल पानी पानी हो जाएगा।

प्रश्न यह है कि वे हमें हमारी हवेली क्यों न खोलने दें! हम अपने पूर्वजों के ज्ञान को देखने से भी वंचित क्यों रहें? वे भी उन्हीं के वंशज हैं। ज्ञान का सूर्य निकलेगा तो प्रकाश तो उन्हें भी मिलेगा।

कब तक उगते रहेंगे रामपाल?

रामपाल का भाण्डा आखिर फूट गया। इस मौके पर हर उस व्यक्ति ने राहत की साँस ली, जो धार्मिक क्षेत्र में इस अराजक गुण्डागर्दी से खिन्न था। आज वीर हुतात्मा सोनू, आर्यसमाज के होनहार विद्वान् उदयवीर, बांके छैल छबीले नौजवान संदीप और करौंथा की बलिदानी बहन का परिवार कुछ संतोष अनुभव कर रहा होगा, जिन्हें इस पाप के अड्डे को उखाड़ने के लिए अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ी। यह एक महंगा सौदा है कि ऐसे पाखण्डों को समाप्त करने के लिए अमूल्य प्राणों की भेंट चढ़ानी पड़े।

रामपाल ने स्वामी दयानन्द के विरुद्ध अनर्गल प्रलाप किया, आपत्तिजनक बातें कीं। पर यह पहली बार नहीं हुआ है। आर्यसमाज की स्थापना से लेकर ही आर्यसमाज के ऊपर इस प्रकार के आक्रमण होते आए हैं। आर्यसमाज ने कभी गालियों का उत्तर गालियों से देने की आवश्यकता नहीं समझी। बौद्धिक स्तर पर ही आर्यसमाज लड़ता रहा। रामपाल ने ऋषि दयानन्द के विरुद्ध कुछ नया नहीं कहा। उसके पास तर्क थे भी नहीं। आज भी आर्यसमाज के पास उसके सारे कुतर्कों का उत्तर है। आर्यसमाज इसे प्रकाशित भी कर चुका है। उसका अनर्गल प्रलाप ही वह कारण नहीं था जिसके कारण आर्यसमाज सड़कों पर उतरा। आर्यसमाज के सड़कों पर उतरने का कारण उसकी अराजक गतिविधियाँ थीं, जिनको स्थानीय लोग झेल रहे थे। उनकी जमीनों को खतरा था। उनकी बहु बेटियों के मान पर आँच आ रही थी। रामपाल ने अपना नाम कमाने के लिए आर्यसमाज को निशाने पर लिया। आर्यसमाज ने स्वाभाविक रूप से पाखण्ड के विरुद्ध सिंहनाद किया। आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य ही है– संसार का उपकार करना। बौद्धिक स्तर पर रामपाल का जवाब केवल आर्यसमाज ही दे सकता था। आर्यसमाज ने चार बलिदान दिये। आचार्य बलदेव और आचार्य राजेन्द्र जैसे तपस्वियों ने लाठियाँ खाईं। आजादी से पूर्व हैदराबाद में भी आर्यसमाज ने ३६ बलिदान किये थे। हैदराबाद का निजाम कोई ऋषि दयानन्द पर आपत्तिजनक टिप्पणियाँ नहीं कर रहा था। वहाँ भी आर्यसमाज का उद्देश्य संसार का उपकार करना ही था।

जैसा कि रामपाल ने कहा, उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई थी। यदि उसकी बुद्धि भ्रष्ट न होती तो संभवतः उसके पाप के अड्डे का विनाश नहीं ही होता। यदि वह न्यायालय को चुनौती न देता तो शायद उसका भाण्डा नहीं फूटता। वह शासन और प्रशासन को शक्ति को नहीं समझ सका। या फिर उसने पहले की तरह यह समझ लिया कि सरकार कहीं न कहीं उसकी भेड़ों की भीड़ देखकर उसके प्रति नरम रवैया अपनाएगी। रामपाल द्वारा न्यायालय की अवहेलना और न्यायालय के दृढ़ रवैये ने सरकार को यह अवसर ही नहीं दिया कि वह उसके प्रति नरम हो सके। साथ ही यदि रामपाल पहली पेशी में ही पकड़ा जाता तो संभवतः पूरी दुनिया को रामपाल की वास्तविकता का पता भी न चलता। कहीं न कहीं उसे सहानुभूति भी मिलती। पर मूर्खता और अहंकार का साम्राज्य ऐसे ही नष्ट होता है, बुद्धिभ्रष्ट होकर व्यक्ति स्वयं ऐसी गलती करता है जो उसके विनाश का कारण बन जाती है।

लेकिन ऐसे बहुत से रामपाल अभी दनदना रहे हैं और उनका धंधा फल–फूल रहा है। जब तक लोग बेवकूफ बनते रहेंगे तब तक बेवकूफ बनाने वालों की कमी क्यों होने लगी? इसकी चिन्ता केवल आर्यसमाज को है, क्योंकि आर्यसमाज को वोटों की चिन्ता नहीं है, समाज के व्यापक हित की चिन्ता है। मत मतान्तरों के झगड़े समाप्त हुए बिना मनुष्य समाज में सच्ची एकता स्थापित नहीं हो सकती। ये जो नए नए लोग धार्मिक क्षेत्र में अपना साम्राज्य खड़ा करते हैं, इनका तो कोई मत ही नहीं है। ये अपने अनुयायियों की संख्या बढ़ाते हैं। कुछ लोग अपने ऐशो आराम के लिए इनसे जुड़ते हैं, यह इनका गैंग होता है। बाकी आम जनता इनकी भव्य छवि के कारण इनसे जुड़ती है। चेलों के मध्य मोहपाश का ऐसा जाल बुना जाता है कि वे चाह कर भी अपनी बुद्धि का प्रयोग नहीं कर सकते।

रामपाल ने तो भगवान बनने के लिए भगवान की परिभाषा ही बदल दी। उसने भगवान का पूरा खानदान बना दिया। अब सामने आ रहा है कि उसके ८० प्रतिशत चेलों को कुछ पता ही नहीं था– न सच का, न रामपाल के झूठ का। उन्होंने उसके गैंग वाले पक्के चेलों से जो सुना, उनको केवल वही पता था। उनको कुछ अन्तर भी नहीं पड़ता था कि सच और झूठ क्या है! अब भी उनको पता नहीं चलेगा कि कैंसर तक को ठीक करने वाला रामपाल जेल में कब्ज और खांसी का रोगी है। उनको इस बात से भी कोई मतलब नहीं है कि आकाश मार्ग से आकर बिजली

की बड़ी लाईन से चेले को बचा लेने वाला रामपाल पुलिस से बचने के लिए उड़ क्यों नहीं गया? उनमें से अधिकांश लोग अनपढ़ हैं, वे अखबार नहीं पढ़ते, वे खबरें नहीं सुनते। ज्यादातर लोग इस घटना से कोई पाठ भी नहीं पढ़ेंगे। उन्हें फिर से किसी 'भगवान' के बारे में पता चलेगा तो वे उसके पास भी चले जाएँगे।

आज भी देश में इतनी अविद्या है! कि कलेजा मुंह को आ जाता है। इसका दर्द केवल आर्यसमाज को होता है। और कौन इनको बचाएगा? कौन पाखण्ड और अंधविश्वास के आगे सीना तान कर मरने के लिए खड़ा होगा? राजनीति करने वालों को तो वोट लेने हैं। दूसरे मत मतान्तरों को अपनी दुकानदारी करनी है। शीशे के महलों में रहने वाले दूसरों के घरों पर पत्थर क्यों फैंकेंगे? उन्हें अपने घरों का भी तो डर है। आर्यसमाज ही सदा से खड़ा होता आया है और खड़ा होता रहेगा, पर देश के लोग कब समझेंगे कि उनका हित किस बात में है। सत्य वेद विद्या का प्रचार नहीं होगा तो यूँ ही अनेकों रामपाल उगते रहेंगे। न्यायालय यह लड़ाई कब तक लड़ेगा?

आपकी सम्मतियाँ

आप महान ऋषि देव दयानन्द का सन्देश जन जन तक पहुंचाने का कार्य करके, उनके सपनों को साकार करने में तत्पर हैं। ईश्वर आपको सदैव शक्ति प्रदान करे, जिससे हमारा भारतवर्ष गुरुडम, पाखण्ड और अंधविश्वास से मुक्ति पा सके।

प्रकाशचन्द्र अग्रवाल,
द्वारा मनीष ट्रेडिंग कम्पनी, नेहरु रोड
पो० सिलीगुडी, जिला दार्जिलिंग-७३४४०५

शांतिधर्मी से मिला हमको नूतन ज्ञान।
वीर कथाओं से जगा, पुण्य राष्ट्र-अभिमान।
पुण्य राष्ट्र अभिमान, आत्मिक शांति पाई।
वेद शास्त्र नीति ग्रंथों की करें पढ़ाई।।
बन जाये हर व्यक्ति, सत्व्रती और सुकर्मी,
भारत के घर घर में पहुंचे शांतिधर्मी।।

बंसीलाल चावला,
झोझू कलां भिवानी (हरियाणा)

अक्तूबर-नवम्बर अंक को देखकर मन मयूर नाच उठा। वैसे तो हर अंक रोचक और आकर्षक होता है, परन्तु इस अंक में विशेष सामग्री और साज सज्जा देखकर अति प्रसन्नता हुई। आप सुन्दर, प्रेरक, रोचक सिद्धान्तपरक जीवन निर्माण की साम्रगी शांतिधर्मी के माध्यम से प्रदान करते हैं जो आम पाठक के लिए अति उपादेय होती है, अतः आप साधुवाद के पात्र हैं।

ब्र० मनीष कुमार
आर्ष महाविद्यालय, गुरुकुल कालवा, जि० जींद (हरि०)

वाल्मीकि रामायण से संबंधित श्री यशपाल शास्त्री का आलेख पढ़ा तो जैसे आँखें खुल गई। मैं भी कई बार इन घटनाओं पर विचार करता था, पर मेरी बुद्धि इन्हें स्वीकार नहीं करती थी। और शायद मेरा मन इन बातों को कल्पित इतिहास समझने की ओर झुक रहा था। इस लेख से मेरी शंकाओं का समाधान हो गया। समाज में ये धारणाएँ इतनी गहराई से प्रचलित हैं कि इनको रोकना या बदलना असंभव सा दिखाई देता है।

आदित्य सिंहमार
राजकीय कालेज, हांसी, जिला हिसार

मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई कि विश्वविख्यात कवयित्री डॉ० कविता वाचक्नवी एक लेखिका के रूप में शांतिधर्मी से जुड़ गई हैं। इनका लेख 'आर्यसमाज, गांधी, गोडसे और हिंसा' रोंगटे खड़े कर देने वाला है। वास्तव में यह इतिहास की विडम्बना ही कही जाएगी कि गांधी जी के भारी-भरकम व्यक्तित्त्व का निर्माण करके सरदार पटेल और स्वामी श्रद्धानन्द के योगदान को किनारे लगा दिया गया। स्वामी जी के साथ तो यह अन्याय हत्या के पश्चात् भी होता रहा। यह सच है कि गोडसे को इतना कोसा गया है कि अब उनसे सहानुभूति होने लगी है। इस जानकारीपूर्ण लेख के लिए कविता जी को धन्यवाद और सम्पादक को साधुवाद।

जितेन्द्र प्रताप शास्त्री
पाल्हावास, जिला रेवाड़ी-१२३४०१

पाठकों से निवेदन

- कृपया पत्र में अपना पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें, यदि ईमेल है तो वह भी लिखें।
- आप अपनी प्रतिक्रिया ईमेल के माध्यम से भी भेज सकते हैं।

ई-मेल- **shantidharmijind@gmail.com**

सोम सरोवर (चतुर्थ खण्ड)

गायत्री छन्दः । षड्ज स्वरः

❒पं० चमूपति जी

व्रती सोम

अध्वर्यो अद्रिभिः सुतं सोम पवित्रे आनय।
पुनाहीन्द्राय पातवे।।३।।

ऋषि– उचथ्यः = वक्ता

(अध्वर्यो) अहिंसा आदि व्रतों के इच्छुक मेरे मन! (अद्रिभिः सुतम्) मेघों, पर्वतों तथा ऋषियों की वाणियों से उत्पन्न हुए (सोमन्) सोम रस को (पवित्रे) हृदय की चलनी में (आनय) ले आ। (पुनाहि) इसे पवित्र कर! (इन्द्राय) जिससे तेरा आत्मा (पातवे) इसका पान करे।

ऐ मेरे मन! क्या तेरी अब यह इच्छा है कि तू यम नियमों का पालन करे? तू किसी के मन को दुखाए नहीं? मनसा, वाचा, कर्मणा अहिंसा व्रत का व्रती हो! तेरे विचार में, व्यवहार में सत्य हो? तू किसी के अधिकार को हर कर चोरी का दोषी न हो? तेरा आन्तरिक तथा बाह्य जीवन ब्रह्मचर्य का जीता जागता चित्र हो? तू काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि बुराईयों से रहित हो? तू पवित्र हो, संतुष्ट हो, ईश्वर–परायण हो?

ऐ मेरे मन! क्या अब तूने पवित्र जीवन व्यतीत करने का संकल्प कर लिया है? तू स्वार्थी नहीं रहा? तेरे विचार का क्षेत्र संकुचित नहीं, सीमित नहीं, विस्तृत हो गया है? तू विश्व से प्यार करता है? अपने पराए में कोई भेद नहीं समझता? पृथ्वी तेरी है और तू पृथ्वी का? आकाश तेरा है? जीव जात सब तेरे बांधव हैं?

यह संकल्प पुण्य है, पवित्र है। परन्तु इसकी सिद्धि आँख मूंदने से न होगी। तू अपने विचार की कोठरी से निकल। जरा अपने सिर पर ही मँडला रहे बादलों को, चारों ओर पँक्तियाँ बाँधकर खड़े पहाड़ों को देख। उनमें हो रहे पत्तों के, पक्षियों के, प्रपातों के कल कल नादों को सुन! भक्ति रस का यह प्रवाह क्या तेरे हृदय में कोई विशेष आह्लाद पैदा नहीं करता? इस प्रवाह की भैतिक पवित्रता तो इन्द्रियों द्वारा प्रतीत हो ही रही है। इस रस का आध्यात्मिक स्वरूप किसी भावुक के हृदय द्वारा ही अनुभव में आता है। हृदय की चलनी में छनकर यह रस आत्मा के– इन्द्रियों के राजा इन्द्र के – पान के योगय हो जाता है। इस आध्यात्मिक पवित्रता के क्या कहने!

आत्मा के ओठों से यह प्याली लगी नहीं, कि यम नियम हाथ बांध स्वयं अध्वर्यु के – व्रतों के अभ्यासी के सम्मुख विद्यमान हो जाते हैं। पापी से पापी पुरुष जब भक्ति रस का एक घूंट अपने अनुभव के गले से उतार ले, सदाचार उसके स्वभाव में आ जाता है। यम नियम मानो उसकी घुट्टी में पड़ गए। प्रभु का भक्त न हिंसा कर सकता है, न ही झूठ बोल सकता है। ब्रह्मचर्य उसके अंगों में समा जाता है। जगत् भर का स्त्री समाज उसके लिए जगज्जननी की दिव्य झांकी का झरोखा सा बन जाता है। सदाचार उसके रोम रोम से फूटा पड़ता है। व्रतों का पालन अनायास उसके मन तथा शरीर द्वारा होता चला जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि व्रतों ने उसके शरीर को अपना आवास सा बना लिया है।

मेरे व्रतेच्छु मन! तू इस रस के स्रोत में डुबकी लगा। अपने आप को सर्वात्मना इसमें डुबो दे। शराबोर कर दे। फिर व्रत स्वयं तेरा पीछा करेंगे। तुझे पता ही न लगेगा कि तू व्रती है, और तू व्रती होगा। अध्वर्यु नहीं, स्वयं अध्वर!

चाणक्य-नीति

सप्तमः अध्यायः

(क्रमागत)

शुनः पुच्छमिव व्यर्थं जीवितं विद्यया विना।
न गुह्यगोपने शक्तं न च दंशनिवारणे।।१९।।

बिना पूंछ वाले कुत्ते की तरह विद्याहीन व्यक्ति का जीवन व्यर्थ होता है। जैसे वह कुत्ता न तो अपने अंगों को छिपा सकता है और न मक्खी मच्छरों से अपनी रक्षा कर सकता है, उसी प्रकार विद्याहीन व्यक्ति न तो परलोक का साधन कर सकता है और न ही इस जीवन को ठीक प्रकार से यापन कर सकता है।

वाचः शौचं च मनसः शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
सर्वहितं दयाशौचं एतत्छौचं परार्थिनाम्।।२०।।

मनुष्य को सब प्रकार की पवित्रता को ग्रहण करना चाहिए। वाणी और मन की पवित्रता, इन्द्रियों की पवित्रता इन्द्रियों का निग्रह करने से आती है। वही दया श्रेष्ठ और पवित्र होती है जिसमें सर्वहित हो। जो अपने समस्त साधनों से दूसरों का उपकार करते हैं, वे ही पवित्रता को प्राप्त करते हैं।

पुष्पे गंधं तिले तैलं काष्ठेऽग्निः पयसि घृतम्।
इक्षौ गुडं तथा देहे पश्याऽऽत्मानं विवेकतः।।२१

कुछ लोग कहते हैं यह शरीर ही सब कुछ है, आत्मा होता तो दिखाई क्यों नहीं देता। आचार्य कहते हैं कि उसे चर्म चक्षुओं से नहीं विवेक से देखा जाता है। जैसे पुष्प में सुगन्ध होती है, तिल में तेल होता है, काष्ठ में अग्नि होती है, दूध में घी होता है। ईख में गुड़ होता है उसी प्रकार शरीर में आत्मा होता है जिसे विवेक की आँखों से देखा जाता है।

(इति सप्तमोऽध्यायः।।)

अमृत वचनावली

ज्ञानशतकम्

❑**डॉ० रामभक्त लांगायन** आई ए एस (से० नि०)

ब्रह्मणः सत्यतो ज्ञात्वा स्वप्नवमन्यते जगत्।
लभते स परां शांतिं नरः शाश्वतिक सुखम्।।४३।।

जो इस संसार को नाशवान् समझता है और परमात्मा को सच्चा मानता है, वही इंसान इस संसार में रहते हुए सुख व शांति प्राप्त कर सकता है।

निःसंगः सर्वचिन्तासु सुनिःस्पृह सुखदुःखयोः।
जयाजयौ समं धत्ते, स वै युक्ततमो मतः।।४४।।

जिसने सब चिन्ताओं से मुक्ति पा ली है, जिसे सुख-दुःख, हार-जीत प्रभावित नहीं करते; वही सच्चा योगी है।

व्रजत्वं कुसुमत्वं च हृदि सर्वस्य वर्तते।
तयोरद्वैतभावत्त्वं संन्यासोऽमृत मूलकः।।४५।।

मनुष्य के अन्दर दो बाते हैं- पत्थर (तलवार) और फूल (हृदय) यदि इन दोनों भावों का अस्तित्त्व अलग अलग बना रहेगा तो मनुष्य अशांत बना रहेगा। यदि मनुष्य में विद्यमान पत्थर फूल बन जाते हैं और कोई द्वैतभाव नहीं रहता, उस समय मनुष्य अमृततुल्य बन जाता है, यही परम संन्यास की अवस्था है।

आत्मैव घातितस्तेन न तु कालोऽतिवाहितः।
सत्यं नान्वेषितो येन सत्यान्वेषी तु योगयुक्।।४६।।

जिन्होंने सत्य को जानने के लिए समय नहीं निकाला, वे समय को नहीं अपने को काट रहे हैं और जिन्होंने सत्य को जानने की कोशिश की वे अमृत को प्राप्त हो जाते हैं।

व्ययतो वृद्धिमायाति क्षयमायाति संचयात्।
विद्या तथाऽऽत्मविद्यापि बाह्यसम्पद्विलीयते।।४७।।

जिस प्रकार विद्या खर्च करने से बढ़ती है, खर्च न करने पर घटती है, उसी प्रकार बाहर की सम्पदा बाँटने से खत्म हो जाती है, लेकिन अन्दर की सम्पदा बाँटने से बढ़ जाती है।

राष्ट्र-चिन्तन

राष्ट्ररक्षा के छः आधार

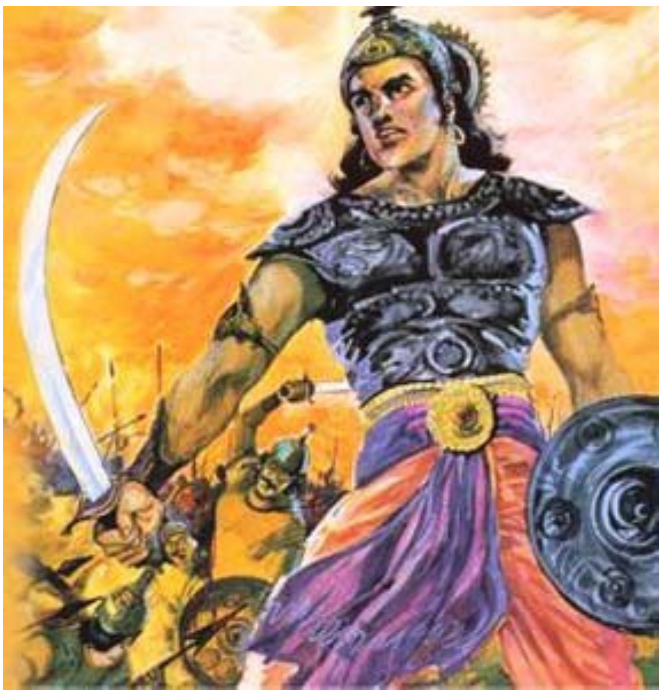

❑वेदप्रकाश शास्त्री

वर्तमान का एक सिरा भूत है, दूसरा भविष्य है। यदि हम अपनी भूलों को सुधार कर इन षडाधारों को धारण कर वर्तमान का सदुपयोग कर लेते हैं तो भविष्य भव्य बना देंगे।

सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवीं नः कृणोतु।।
अथर्ववेद १२/१/१

(वृहद्) विशाल (सत्यं) सत्य (उग्रं ऋतं) उग्र अनुशासन (दीक्षा) दृढ़संकल्प (तपः) श्रम (ब्रह्म) वेदाध्ययन, वीर्यरक्षा से प्राप्त विवेक (यज्ञः) संगठन, संगतिकरण। ये पृथ्वी की रक्षा करते हैं।

इस वेद मंत्र में राष्ट्र की रक्षा और उन्नति के लिए आवश्यक छः बातों की ओर निर्देश किया गया है। वे क्रमशः इस प्रकार हैं-

१-विराट् सत्य	२-उग्र अनुशासन (आत्मसंयम)
३-दृढ़ संकल्प	४-घोर तप
५- (ब्रह्म) विवेक	६-यज्ञ= संगठन/संगतिकरण

विशाल सत्यः-

प्रत्येक व्यक्ति में मातृभूमि के प्रति सत्यनिष्ठा हो, उसकी उन्नति की कामना को विशाल सत्य समझें। जो व्यक्ति जहाँ के अन्न, जलवायु से जीवन धारण करते हों यदि उस राष्ट्र की उन्नति को विशाल सत्य न मानते हों, अपना स्वार्थ प्रेम दूसरे राष्ट्र से करते हों, ऐसे कृतघ्नी पामर राष्ट्रद्रोही दण्डनीय हैं। अतः मन्त्र में प्रथम विशाल सत्य कहा। यह समस्त राष्ट्र ही विशाल सत्य है। राष्ट्र की अपेक्षा प्रान्त, जिला, नगर, समाज एवं व्यक्ति अल्प सत्य हैं। विशाल सत्य की रक्षणार्थ अल्प सत्य की बलि दी जा सकती है, परन्तु अल्प सत्य के लिए विशाल सत्य को क्षीण नहीं किया जा सकता। शरीर की रक्षा हेतु शरीर के किसी हिस्से को काटा जा सकता है, किन्तु उस हिस्से की रक्षा हेतु शरीर को नष्ट नहीं किया जा सकता है। बहुत के हितार्थ अल्प को बलिदान किया जा सकता है परन्तु अल्प के हितार्थ बहु की बलि नहीं दी जा सकती है। सारांश यह है कि पूर्ण की रक्षा में अंश स्वतः सुरक्षित है। पूर्ण का विनाश प्रत्येक अंश का विनाश है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को अपने व्यक्तिगत स्वार्थ, यदि वे राष्ट्र-हित में बाधा बनते हों, त्याग देने चाहिएँ।

आत्मसंयमः-

इस विशाल सत्य की रक्षा के लिए नियमानुकूल जीवन, आत्मसंयम होना नितान्त आवश्यक है। उग्र अनुशासन कठोर अनुशासन से सम्भव नहीं है। वह तो नियमानुकूल जीवन और आत्मसंयम से ही हो सकता है। जिस राष्ट्र के शासक में उग्रता/तेजस्विता नहीं है वह पदे-पदे राष्ट्र का अपमान करता है। उस देश के निवासियों को दूसरे देशों में हीन दृष्टि से देखा जाता है, कोई उसकी भूमि दबा लेता है, कोई उसके निर्दोष नागरिकों की हत्या करता है। तेज्स्वी राष्ट्र के नेता की एक आवाज पर शत्रु आर्तंकित हो जाते हैं। पुरुषोत्तम राम की उग्रता से सारे राक्षसवंश का ध्वंस हुआ और सोने की लंका ध्वस्त हो गयी। यह उग्रता आत्मानुशासन केन्द्रित होनी चाहिए। इसके मूल में आत्मसंयम है, निरंकुशता

नहीं। अन्दर और बाहर से रक्षा का उपाय केवल उग्र ऋतं अर्थात् कठोर अनुशासन ही है, क्योंकि अनुशासन अथवा मर्यादा पालन ही राष्ट्र की आत्मा है।

दीक्षाः-

राष्ट्र के साथ सत्य भावना रखते हुए और आत्मना उग्र शासन में रहते हुए भी राष्ट्र की अभिवृद्धि तथा उसके उदय के लिये दीक्षा अथवा दृढ़ संकल्प की महती आवश्यकता है। राष्ट्र को सब प्रकार से सबल और आत्मनिर्भर बनाने के लिए अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। संकल्पविहीन व्यक्ति अपने राष्ट्र के उत्थान में कभी समर्थ नहीं हो सकता। अज्ञान, अन्याय, अभाव को दूर करते हुए भय, भ्रष्टाचार तथा शोषण को रोकने के प्रयास सतत संकल्प के द्वारा ही किये जा सकते हैं। बल का संचय करना चाहिए।

शांति की पुकारों से युद्ध को नहीं रोका जा सकता। युद्ध को रोकने का उपाय है शत्रु से द्विगुण सशक्त होना। अपने उदात्त अतीत को बल और दृढ़-संकल्प द्वारा वर्तमान में परिणत कर उपस्थित कर देने के लिए, वेद को पुनः विश्वधर्म और देववाणी को पुनः विश्व भाषा बना सार्वभौम चक्रवती आर्य साम्राज्य की स्थापना करके विश्व को एक अखण्ड/ अभंग परिवार बनाने के लिए हिमालय जैसा संकल्प बल चाहिए।

तपः-

दृढ़-संकल्प करने के लिए भी और उसे पूरा करने के लिए भी घोर तप की आवश्यकता है। तपस्वी व्यक्ति ही संकल्पों की पूर्ति किया करते हैं। शासकों की विलासिता से राष्ट्र नहीं बनते हैं, बल्कि तप के अभाव में बने बनाए साम्राज्य भी नष्ट हो जाते हैं। स्वामी दयानन्द ने आर्यों के चक्रवर्ती साम्राज्य के पतन का कारण आलस्य प्रमाद को ही बताया है। सत्यार्थप्राकश के ग्यारहवें समुल्लास में वे लिखते हैं- 'और यह इस संसार की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि जब बहुत सा धन असंख्य प्रयोजन से अधिक होता है, तब आलस्य, पुरुषार्थ रहितता, ईर्ष्या, द्वेष, विषयासक्ति और प्रमाद बढ़ता है इससे देश में विद्या, सुशिक्षा नष्ट होकर दुर्गुण और दुष्ट व्यसन बढ़ जाते हैं। ' इस विलासिता के कारण बड़े बड़े साम्राज्य नष्ट हो गए। राष्ट्र के उत्थान और उसकी स्थिरता के लिए चाणक्य और महाराणा प्रताप जैसे तपस्वी शासकों की आवश्यकता होती है। तपस्वी व्यक्ति ही राष्ट्र के लिए अपने सुखों का बलिदान दे सकता है।

ब्रह्मः-

ब्रह्म अर्थात् ब्रह्मचर्य=इन्द्रियसंयम और वेदाध्ययन से विवेकशील बनकर उद्देश्य की पूर्ति करना। भोगी विषयी राष्ट्र नष्ट हो जाते हैं। चाणक्य ने कहा है-

राज्यस्य मूलं जितेन्द्रियता।।

राज्य की जड़ जितेन्द्रिता है। अथर्ववेद में कहा है-

ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं विरक्षति।।

ब्रह्मचर्य और तप से राजा राष्ट्र की रक्षा करता है। जकेवल राजा ही नहीं, प्रजा को भी ब्रह्मचर्य की शिक्षा मिलनी चाहिए। आज सहशिक्षा अनैतिकता, विलासिता और गन्दे अश्लील सिनेमों के कारण नवयुवक नवयुवतियाँ चरित्र भ्रष्ट हो गए। राष्ट्र की जितनी हानि अनियन्त्रित भोगों और चरित्रहीनता से होती है उतनी अन्य किसी वस्तु से नहीं। वेद विद्या को भी जैसे तिलांजलि ही दे दी। वेद विद्या के प्रचार प्रसार के बिना मत मतान्तर बढ़ रहे हैं जो देश की एकता और अखण्डता के लिए खतरा बनते जा रहे हैं। साम्प्रदायिकता की भावना से मुक्ति प्राप्त करने के लिए वेदों का अध्ययन और अध्यापन अत्यंत आवश्यक है। आज कितना बड़ा दुर्भाग्य है कि लोग संस्कृत भाषा के पढ़ाने पर भी विवाद खड़े कर रहे हैं। अपने इतिहास और संस्कृति की भाषा पढ़ने से अपने इतिहास और संस्कृति से प्रेम उत्पन्न होता है।

सच्ची आस्तिकता का प्रचार होने से अंधरद्धा, अंधविश्वास, पाखण्ड समाप्त होते हैं। तभी राष्ट्र समृद्ध और शक्तिशाली बनता है। विदेशों और विदेशियों के अनुकरण के अनुसार शासन चलाना अविवेकपूर्ण कार्य है। बुद्धिमानी यही है कि हम जितेन्द्रिय एवं विवेकशील बन अपनी परम्परा/मर्यादाओं के आधार पर राष्ट्र का पुनर्निर्माण करें।

यज्ञ=संगठन अथवा संगतिकरणः-

आवश्यक आधार यह है यज्ञ। यज्ञ का अर्थ है देवपूजा। देवों=विद्धानों को प्रोत्साहन और सम्मान; दुष्ट व्यक्तियों को दण्ड। यज्ञ का अर्थ है संगतिकरण=जो भी असंगठन करने वाले तत्व है उन सबको निर्मूल कर राष्ट्र में एक सम्राट्, एक भाषा, एक संस्कृति, एक धर्म, एक वेश, एक रूप का आदर्श। यह तभी स्थापित हो सकता है जब हम सुसंगठित हों, दलीयता, पार्टीयता आदि को समाप्त कर दें। यज्ञ का अर्थ है दान=असमर्थ व्यक्तियों व अन्य प्राणियों के भी भरणपोषण की पर्याप्त व्यवस्था करना।

वर्तमान का एक सिरा भूत है, दूसरा भविष्य है। यदि हम अपनी भूलों को सुधार कर उपर्युक्त षडाधारों को धारण कर वर्तमान का सदुपयोग कर लेते हैं तो भविष्य भव्य बना देंगे। वर्तमान का बहुत बड़ा महत्त्व है, अतः वर्तमान की साधना से ही राष्ट्र का उत्थान सम्भव है।

बलिदान-दिवस पुण्य संस्मरण

ऋषि दयानन्द का सत्संग

जिसने नास्तिक मुंशीराम को स्वामी श्रद्धानन्द बना दिया

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द की लेखनी से

'देखो, तुमने प्रश्न किए, मैंने उत्तर दिए-यह युक्ति की बात थी। मैंने कब प्रतिज्ञा की थी कि तुम्हारा विश्वास परमेश्वर पर करा दूँगा। तुम्हारा परमेश्वर पर विश्वास उस समय होगा जब वह प्रभु स्वयं तुम्हें विश्वासी बना देंगे।'

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन।

१४ श्रावण संवत् १९३६ के दिन स्वामी दयानन्द बाँस बरेली पधारे। ३ भाद्रपद को चले गए। स्वामीजी महाराज के पहुँचते ही कोतवाल साहब (स्वामी श्रद्धानन्द जी के पिता) को हुकुम मिला कि पण्डित दयानन्द सरस्वती के व्याख्यानों के अन्दर फिसाद को रोकने का बन्दोबस्त कर दें। पिताजी स्वयं सभा में गए और स्वामीजी महाराज के व्याख्यानों से ऐसे प्रभावित हुए कि उनके सत्संग से मुझ नास्तिक की संशय निवृत्ति का उन्हें विश्वास हो गया। रात को घर आते ही मुझे कहा-'बेटा मुंशीराम! एक दण्डी संन्यासी आए हैं, बड़े विद्वान और योगीराज हैं। उनकी वक्तृता सुनकर तुम्हारे संशय दूर हो जायेंगे। कल मेरे साथ चलना।' उत्तर में कह तो दिया कि चलूँगा, परन्तु मन में वही भाव रहा कि केवल संस्कृत जानने वाला साधु बुद्धि की बात क्या करेगा! दूसरे दिन बेगम बाग की कोठी में पिता जी के साथ पहुँचा, जहाँ व्याख्यान हो रहा था। उस दिव्य आदित्य मूर्ति को देख श्रद्धा उत्पन्न हुई, परन्तु जब पादरी टी० जे० स्कॉट और दो तीन अन्य यूरोपियनों को उत्सुकता से बैठे देखा तो श्रद्धा और भी बढ़ी। अभी दस मिनट वक्तृता नहीं सुनी थी कि मन में विचार किया-'यह विचित्र व्यक्ति है कि केवल संस्कृतज्ञ होते युक्तियुक्त बातें करता है कि विद्वान दंग हो जायें। व्याख्यान परमात्मा के निज नाम ओ३म् पर था। वह पहले दिन का आत्मिक आह्लाद कभी नहीं भूल सकता। नास्तिक रहते हुए भी आत्मिक आह्लाद में निमग्न कर देना ऋषि आत्मा का ही काम था।

उसी दिन दण्डी स्वामी से निवेदन किया गया कि टाऊन हाल मिल गया है इसलिए कल से व्याख्यान वहाँ शुरू होंगे। स्वामीजी ने उच्च स्वर में कह दिया कि सवारी ठीक समय पर पहुँच जाया करेगी तो वह तैयार मिलेंगे।

टाऊन हॉल में जब तक 'नमस्ते', 'पोप', 'पुराणी, जैनी, किरानी, कुरानी' इत्यादि परिभाषाओं का अर्थ बतलाते रहे, तब तक तो पिताजी श्रद्धा से सुनते रहे, परन्तु जब मूर्ति पूजा और ईश्वरावतार का खण्डन होने लगा तो जहाँ एक ओर मेरी श्रद्धा बढ़ने लगी, वहाँ पिताजी ने तो आना बन्द कर दिया और एक अपने मातहत थानेदार की ड्यूटी लगा दी। २४ अगस्त की शाम तक मेरा समय विभाग यह रहा कि दिन का भोजन करके दोपहर को ही बेगम बाग की कोठी पहुँच ड्योढी पर बैठ जाता। २ और ४ बजे के बीच में जब ऋषि का दरबार लगता तो आज्ञा होते ही जो पहला मनुष्य आचार्य ऋषि को प्रणाम करता, वह मैं था। प्रश्नोत्तर होते रहते और मैं उनका आनन्द लेता रहता। व्याख्यान के लिए २० मिनट पहले सब दरबारी विदा हो जाते और आचार्य चलने की तैयारी कर लेते। मैं अपनी वेगनट पर सीधा टाऊन हाल पहुँचता। व्याख्यान का आनन्द उठाकर उस समय तक घर न लौटता जब तक कि आचार्य दयानन्द की बग्घी उनके डेरे की ओर न चल देती। २५, २६, २७ अगस्त को ऋषि दयानन्द के पादरी स्कॉट के साथ तीन शास्त्रार्थ हुए। विषय प्रथम दिवस पुनर्जन्म, द्वितीय दिन ईश्वरावतार और तीसरे दिन मनुष्य के पाप बिना फल भुगते क्षमा किये जाते हैं या नहीं। पहले दो दिन लेखकों में मैं भी था। परन्तु दूसरी रात को मुझे सन्निपात ज्वर हो गया और फिर आचार्य दयानन्द के दर्शन में न कर सका। ३० श्रावण से ९ भाद्रपद (१५ से २५ अगस्त) तक ऋषि जीवन सम्बन्धी अनेक घटनायें मैंने देखीं, जिनमें से उन्हीं कुछ एक को यहाँ लिखूँगा जिनका प्रभाव मुझ पर ऐसा पड़ा कि अब तक मेरी आँखों के सामने घूम रही हैं।

○○○○

मुझे आचार्य दयानन्द के सेवकों से मालूम हुआ कि वह नित्य प्रातः शौच से निवृत्त होकर, केवल कौपीन पहिरे लठ्ठ हाथ में लिए ३:३० बजे बाहर निकल जाते हैं और ६ बजे लौटकर आते हैं। मैंने निश्चय किया कि उनका पीछा करके देखना चाहिए कि बाहर वह क्या करते हैं। दबदब-ए कैसरी अखबार के एडिटर भी मेरे साथ हो लिए। ठीक ३:३० बजे आचार्य चल दिए। हम पीछे हो लिए। पाव मील धीरे धीरे चलकर वह इस तेजी से चले कि मुझ सा शीघ्रगामी जवान भी उन्हें निगाह में न रख सका। आगे तीन मार्ग फटते थे। हमें कुछ पता न लगा कि किधर गए। दूसरे प्रातः काल हम अढ़ाई बजे से ही घात में उस जगह छिपकर जा बैठे जहाँ से तीन मार्ग फटते थे। उस विशाल रुद्र मूर्ति को आते देखकर हम भागने को हो गए। वह तेज चलते थे और मैं पीछे भाग रहा था। मेरे पीछे बनिए एडिटर भी लुढ़कते लुढ़कते आ रहे थे। बीच में एक आध मील दौड़ भी रुद्र स्वामी ने लगाई। परन्तु वहाँ मैदान था। मैंने भी उनको आँख से ओझल न होने दिया। अन्त को पाव मील धीरे-धीरे चलकर एक पीपल के वृक्ष तले बैठ गये। घड़ी से मिलाया तो पूरे डेढ़ घण्टे आसन जमाये समाधि में स्थित रहे। प्राणायाम करते नहीं प्रतीत हुए, आसन जमाते ही समाधि लग गई। उठकर दो अंगडाइयाँ लीं और टहलते हुए तत्कालीन आश्रम की ओर चल दिए।

❍❍❍❍

एक शनीचर के व्याख्यान के पीछे श्रोतागण को बतलाया गया कि दूसरे दिन (आदित्यवार को) नियम समय से एक घण्टा पहले व्याख्यान शुरू होगा। आचार्य ने उसी समय कह दिया कि यदि सवारी एक घण्टा पहले पहुँचेगी तो मैं उसी समय चलने को तैयार रहूँगा। आदित्यवार को लोग पिछले समय से डेढ़ घंटे पहले ही जमा होने लगे। हॉल (व्याख्यान भवन) खचाखच भर गया, परन्तु आचार्य न पहुँचे। पाव घंटा, आध घंटा भी बीत गया परन्तु बग्घी की घड़घड़ाहट न सुनाई दी। पौन घंटा पीछे ऋषि दयानन्द की विशाल मूर्ति उन्हीं वस्त्रों से अलंकृत जो उनके चित्र में दिखाये जाते हैं, ऊपर चढ़ती दिखाई दी। मध्य की डाट के नीचे वाली एक ओर को दीवार में सोटा टेक कर, ईश्वर प्रार्थना के लिए बैठने से पूर्व उन्होंने कहा-'मैं समय पर तैयार था। परन्तु सवारी न आई। बहुत प्रतीक्षा के पीछे पैदल चल दिया। मार्ग में पिछले नियत समय पर ही सवारी मिली। इसलिए देर हो गई। सभ्य पुरुषो! मेरा कुछ दोष नहीं है। दोष बच्चों के बच्चों का है जो प्रतिज्ञा करके पालन करना नहीं जानते।' यह संकेत खजांची लक्ष्मीनारायण की ओर था कि जिनके अतिथि होकर उनकी बेगम बाग वाली कोठी में स्वामी दयानन्द रहते थे। बाबू लक्ष्मीनारायण पाँच खजानों के खजांची थे और बरेली में उस समय करोड़पति समझे जाते थे।

❍❍❍❍

एक व्याख्यान में वह पौराणिक असम्भव तथा आचार भ्रष्ट कहानियों का खण्डन कर रहे थे। उस समय पादरी स्काट, मिस्टर एडवर्डस कमिश्नर, मिस्टर रीड क्लेक्टर, १५ वा २० अंग्रेजों सहित उपस्थित थे। आचार्य ने अन्य कहानियों में पंचकुंवारियों की कल्पना पर कटाक्ष किया और एक से अधिक पति रखने वाली द्रोपदी, तारा, मन्दोदरी आदि के किस्से सुनाकर श्रोतागणों के धार्मिक भावों की अपील की। स्वामी जी कथन में हास्यरस अधिक होता था, इसलिए श्रोतागण थकते नहीं थे। सब हँसते और आनन्द लूटते रहे। फिर भी आचार्य बोले-'पुराणिकों की तो यह लीला है, अब किरानियों की लीला सुनो! ये ऐसे भ्रष्ट हैं कि कुमारी के पुत्र उत्पन्न होना बतलाते, फिर दोष सर्वज्ञ शुद्ध परमात्मा पर लगाते और ऐसा घोर पाप करते हुए तनिक भी लज्जित नहीं होते।' इतना सुनते ही कमिश्नर और क्लेक्टर के मुंह क्रोध से लाल हो गए परन्तु आचार्य का भाषण उसी बल से चलता रहा।

दूसरे दिन प्रातः काल ही खजान्ची लक्ष्मीनारायण को कमिश्नर साहब के यहाँ बुलावा आया। साहब ने कहा अपने पण्डित स्वामी को समझा दो कि सख्ती से काम न लिया करें। हम ईसाई तो सभ्य हैं, वाद विवाद की सख्ती से नहीं घबराते, परन्तु यदि जाहिल हिन्दु मुसलमान भड़क उठे तो तुम्हारे पण्डित स्वामी के व्याख्यान बन्द हो जायेंगे। खजान्ची जी यह संदेश आचार्य तक पहुंचाने की प्रतिज्ञा करके लौटे। खजान्ची जी चाहते थे कि बात छेड़ने वाला कोई अन्य मिल जाये। जब कोई खड़ा न हुआ तो मुझ नास्तिक को आगे किया गया। परन्तु मैंने यह कहकर अपना पीछा छुड़ाया कि खजान्ची साहब कुछ कहना चाहते हैं, क्योंकि कमिश्नर साहब ने उसे बुलाया था। अब सारी मुसीबत खजान्ची जी पर ही टूट पड़ी। खजान्ची साहब कहीं सिर खुजाते हैं, कहीं गला साफ करते हैं। पांच मिनट तक आश्चर्यित आचार्य बोले-'भई, तुम्हारा तो कोई काम करने का समय ही नियत नहीं, तुम समय के मूल्य को नहीं समझते। मेरे लिए समय अमूल्य है। जो कुछ कहना हो कह दो।' इस पर खजान्ची जी बोले-'महाराज ! अगर सख्ती न की जाय तो क्या हर्ज है? असर भी अच्छा पड़ता है, अंग्रेजों को नाराज करना भी अच्छा नहीं-इत्यादि।' बड़ी कठिनाई से अटक-अटक कर ये वचन गरीब के मुंह से निकले। महाराज हंसे और कहा-'अरे! बात क्या थी जिसके लिए

गिड़गिड़ाता है। मेरा इतना समय भी नष्ट किया। साहब ने कहा होगा तुम्हारा पण्डित कड़ा बोलता है, व्याख्यान बन्द हो जायेंगे, यह होगा, वह होगा। अरे भाई ! मैं हौवा तो नहीं कि तुझे खा लूंगा। उसने तुझसे कहा, तू सीधा मुझसे कह देता। व्यर्थ इतना समय क्यों गंवाया? एक विश्वासी पौराणिक हिन्दु बैठा था, बोला–'देखो! यह तो कोई अवतार हैं, मन की बात जान लेते हैं।'

उस शाम के व्याख्यान को कौन सुनने वाला भूल सकता है? मैंने बड़े बड़े वाग्विशारदों के व्याख्यान सुने हैं। परन्तु जो तेज आचार्य के उस दिन के सीधे सीधे शब्दों से निकल कर सारी सभा को उत्तेजित कर गया उसके साथ किसकी उपमा दूँ! उस दिन आत्मा के स्वरूप पर व्याख्यान था। पूर्व दिवस के सब अंग्रेज पादरी स्कॉट के अतिरिक्त उपस्थित थे। व्याख्यान में सत्य के बल का विषय आया। सत्य की व्याख्या करते हुए आचार्य ने कहा–''लोग कहते हैं कि सत्य को प्रगट न करो कलक्टरञ्क्रोधित होगा, अप्रसन्न होगा, गवर्नर पीड़ा देगा। अरे! चक्रवर्ती राजा भी क्यों न अप्रसन्न हो, हम तो सत्य ही कहेंगे।'' इसके पीछे एक श्लोक पढ़कर आत्मा की स्तुति की। न शास्त्र उसे काट सके, न आग उसे जला सके, न पानी उसे गला सके और न हवा उसे सुखा सके। वह नित्य अमर है। फिर गरजते हुए शब्दों में बोले–''यह शरीर तो अनित्य है, इसकी रक्षा में प्रवृत्त होकर अधर्म करना व्यर्थ है। इसे जिस मनुष्य का जी चाहे नाश कर दे।'' फिर चारों और तीक्ष्ण दृष्टि डाल कर सिंहनाद करते हुए कहा–'किन्तु वह शूरवीर पुरुष मुझे दिखाओ जो मेरे आत्मा का नाश करने का दावा करे। जब तक ऐसा वीर इस संसार में दिखाई नहीं देता तब तक मैं यह सोचने के लिए भी तैयार नहीं कि सत्य को दबाऊँगा वा नहीं।' सारे हाल में सन्नाटा छा गया। रुमाल का गिरना भी सुनाई देता था।

❍❍❍❍

व्याख्यान में कुछ देर हो गई थी। उठते ही ऋषि दयानन्द ने पूछा–'भक्त स्कॉट आज दिखाई नहीं दिये।' पादरी साहब किसी व्याख्यान से भी अनुपस्थित नहीं होते थे, अलग भी प्रेम से वार्तालाप किया करते थे, इसलिए ऋषि को उनसे बड़ा प्रेम हो गया था। किसी ने कहा, पास के गिरजे चेपल में आज उनका व्याख्यान था। सीढ़ियों के नीचे उतरते ही ऋषि ने कहा–'चलो, भक्त स्कॉट का गिरजा देख आवें।' अभी तीन चार सौ आदमी खड़े थे। वह सारी भीड़ लेकर गिरजा पहुँचे। वहाँ व्याख्यान खत्म हो चुका था, श्रोता सौ के लगभग थे। पादरी साहब नीचे उतर आये, स्वामीजी को देवी पुलपिट पर ले गये और कहा कि कुछ उपदेश दीजिए। आचार्य ने खड़े खड़े ही बीस मिनट तक मनुष्य पूजा का खण्डन किया।

❍❍❍❍

एक दिन आचार्य को पता लगा कि खजान्ची जी का सम्बन्ध किसी वेश्या से है। उनके आने पर पूछा–तुम्हारा वर्ण क्या है? उन्होंने कहा– 'क्या कहूँ? आप तो गुण कर्मानुसार व्यवस्था मानते हैं।' आचार्य बोले–'यों तो सब वर्णसंकर है परन्तु तुम जन्म के क्या हो?' उत्तर मिला खत्री। महाराज बोले–'यदि खत्री के वीर्य से वेश्या में पुत्र उत्पन्न हो तो उसे क्या कहोगे?' खजान्ची ने सिर नीचा कर लिया। इस पर महाराज ने कहा–'सुनो भाई ! हम किसी का मुलाहजा नहीं करते। हम तो सत्य ही कहेंगे।' खजान्ची जी ने उस वेश्या को कहीं अन्यत्र भिजवा दिया।

❍❍❍❍

एक अन्तिम घटना के साथ इस अपूर्व सत्संग की कथा समाप्त करता हूँ। यद्यपि आचार्य दयानन्द के उपदेशों ने मुझे मोहित कर लिया था, तथापि मैं मन में सोचता था कि यदि ईश्वर और वेद के ढकोसलों को पण्डित दयानन्द स्वामी तिलांजलि दे दें तो फिर कोई भी विद्वान उनकी अपूर्व युक्ति और तर्कना शक्ति का सामना करने वाला न रहे। मुझे अपने नास्तिकपन का उन दिनों अभिमान था। एक दिन ईश्वर के अस्तित्त्व पर आपेक्ष कर डाले। पांच मिनट के प्रश्नोत्तर में इतना घिर गया कि जिह्वा पर मुहर लग गई। मैंने कहा–''महाराज ! आपकी तर्कना बड़ी तीक्ष्ण है। आपने मुझे चुप तो करा दिया, परन्तु यह विश्वास नहीं दिलाया कि परमेश्वर की कोई हस्ती (अस्तित्त्व) है।'

दूसरी बार फिर तैयारी करके गया, परन्तु परिणाम पूर्ववत् ही निकला। तीसरी बार फिर पूरी तैयारी करके गया परन्तु मेरे तर्क को फिर पछाड़ मिली। मैंने फिर अन्तिम उत्तर वही दिया–''महाराज! आपकी तर्कना शक्ति बड़ी प्रबल है, आपने मुझे चुप तो करा दिया, परन्तु यह विश्वास नहीं दिलाया कि परमेश्वर की कोई हस्ती है।'' महाराज पहले हंसे, फिर गम्भीर स्वर से कहा–'देखो, तुमने प्रश्न किए, मैंने उत्तर दिए–यह युक्ति की बात थी। मैंने कब प्रतिज्ञा की थी कि तुम्हारा विश्वास परमेश्वर पर करा दूँगा। तुम्हारा परमेश्वर पर विश्वास उस समय होगा जब वह प्रभु स्वयं तुम्हें विश्वासी बना देंगे।'

अब स्मरण आता है कि नीचे लिखा उपनिषद्वाक्य उन्होंने पढ़ा था–

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन।
यमवैष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा विवृणुते तनुं स्वाम।

कठ० १/२/२२

बलिदान-दिवस

स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान

कारण और पृष्ठभूमि

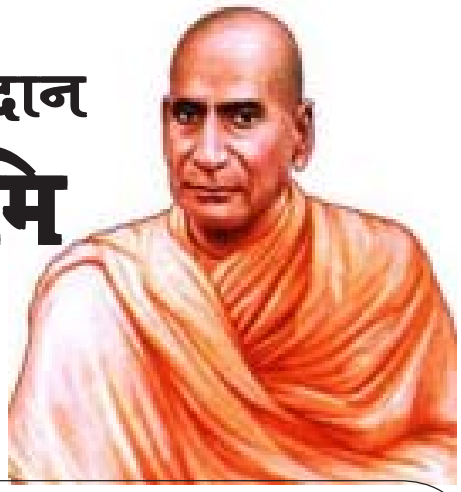

हिन्दू जाति के पतन से दिन-रात तिलमिलाने वाले हे महाभाग संन्यासी! तुम्हारा परम पावन रक्त बहाकर तुमने हम हिन्दुओं को संजीवनी दी है। तुम्हारा यह ऋण हिन्दू जाति आमरण न भूल सकेगी। **-वीर सावरकर**

❑**राजेशार्य आट्टा,** 1166, कच्चा किला, साढौरा, यमुनानगर-१३३२०४

आर्य (हिन्दू) समाज के इस महान नेता की हत्या का मुख्य कारण धार्मिक ही था, पर उसके पीछे छिपे राजनैतिक कारण से भी इन्कार नहीं किया जा सकता। निस्सन्देह स्वामी जी ने गुरुकुल की स्थापना- शिक्षा द्वारा स्वाभिमान जगाकर मानसिक गुलामी, व छुआछूत का विरोध कर सामाजिक गुलामी से मुक्त कराने के लिए की थी, पर अंग्रेजी सरकार इस गुरुकुल से इतनी आर्तंकित थी कि समय-समय पर अंग्रेज अधिकारी गुरुकुल का दौरा करते ही रहते थे कि कहीं वहाँ बम तो नहीं बनाए जा रहे। ३० मार्च (१९१९) को 'रॉलेट एक्ट' के विरोध में जलूस का नेतृत्व करते हुए दिल्ली घण्टाघर में गोरों की संगीनों के सामने जिस साहस से स्वामी जी ने सीना ताना उससे उनके यश को चार चाँद लग गए और ४ अप्रैल को जामा मस्जिद मिम्बर से हिन्दू-मुस्लिम एकता का सन्देश देकर उन्होंने स्वयं को सच्चा राष्ट्रीय नेता सिद्ध कर दिया। जलियांवाला बाग हत्याकांड से सहमी कांग्रेस के अमृतसर अधिवेशन का सफलतापूर्वक संचालन करने के कारण स्वामी जी कांग्रेस के मुख्य नेता बन गये। इससे स्वार्थी नेताओं का कद घट गया और वे स्वामी जी के उभरते व्यक्तित्व को पीछे फेंकने का उपाय सोचने लगे।

कांग्रेस के प्रधान बने मौलाना मौहम्मद अली जब अछूत माने जाने वाले लगभग ७ करोड़ हिन्दुओं को हिन्दू-मुसलमान में आधा-आधा बाँटने के लिए तैयार बैठे थे, तो स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इसका जोरदार विरोध कर दलितोद्धार सभा का गठन किया व करोड़ों व्यक्तियों को आर्थिक (बेगार प्रथा का विरोध कर) व सामाजिक (छुआछूत मिटाकर) सम्मान दिलाया। दलितोद्धार को स्वामी जी कांग्रेस का विषय बनाना चाहते थे, पर कांग्रेसी नेता इसके लिए तैयार नहीं हुए और मुस्लिम कांग्रेसी तो इससे तिलमिलाकर दलितोद्धार में बाधा ही डालने लगे।

अंग्रेजों ने तुर्की के खलीफा का पद समाप्त कर दिया, तो भारत के मुसलमानों ने मौलाना मोहम्मद अली व शौकत अली के नेतृत्व में अंग्रेजों का विरोध करते हुए खिलाफत आंदोलन चलाया। तिलक, मालवीय, एनी बेसेंट आदि के मना करने पर भी गाँधी जी ने खिलाफत का समर्थन किया। स्वामी जी व लाला लाजपतराय भी हिन्दू-मुस्लिम एकता की आशा से गाँधी जी के साथ चल पड़े। मार्च १९२० में अली बन्धुओं के नेतृत्व में एक शिष्ट मण्डल इंग्लैण्ड गया, पर उसे निराशा हाथ लगी। तुर्की के खलीफा को बंदी बनाकर कुस्तुंतुनिया भेज दिया गया और मुस्तफा कमाल पाशा के नेतृत्व में तुर्की में प्रजातंत्र स्थापित हो गया।

खिलाफत आन्दोलन में मिली असफलता की खीज को मुस्लिम नेताओं ने हिन्दुओं पर अत्याचार कर मिटाया। मालाबार में २१ अगस्त १९२१ को मोपला मुसलमानों ने हजारों हिन्दुओं को मुसलमान बनाया, सैंकड़ों को कत्ल किया और उनके घरों को जलाया। महात्मा हंसराज जी के आदेश से महात्मा आनन्द स्वामी जी ने वहाँ जाकर पीड़ितों की सेवा व शुद्धि कार्य किया था। उन्होंने वे दो भयानक कुएँ अपनी आँखों से देखे थे, जिनमें हिन्दू धर्मवीरों की गर्दन काटकर डाली गई थीं।

उसी तर्ज पर १९२२-२३ में मुल्तान तथा अन्य स्थानों पर भयानक उपद्रव हुए। इससे हिन्दुओं की अपार क्षति हुई। अब लालाजी व स्वामी जी खिलाफत का समर्थन

करने की भूल पर पछताये। अहमदाबाद कांग्रेस की विषय निर्धारिणी समिति में मालाबार के मोपला काण्ड की निन्दा का प्रस्ताव आने पर मौलाना हसरत मोहानी जैसे राष्ट्रीय मुसलमानों ने भी जब उसका विरोध किया, तो स्वामी जी चौंक गये और उन्होंने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए शुद्धि की आवश्यकता को अनुभव कर कांग्रेस से त्याग पत्र दे दिया (जनवरी १९२३)।

फरवरी १९२३ में शुद्धि सभा की स्थापना कर सैंकड़ों वर्ष पूर्व मुस्लिम बने लाखों खोजा, मैमन, मलकाने आदि मुसलमानों को भी पुनः हिन्दू धर्म में प्रवेश कराया। यह उनकी स्वेच्छा से पुराने घर में वापसी थी। कांग्रेस ने १९२३ में हुए दंगों के कारणों को जानने के लिए मोतीलाल नेहरू के नेतृत्व में एक समिति बनाई। उसके सदस्यों में मौलाना अबुल कलाम आजाद भी थे। मोतीलाल नेहरू ने रिपोर्ट दी कि हिन्दू-मुसलमानों के दंगों के कारण हैं- स्वामी श्रद्धानन्द।

२८ मार्च १९२४ को 'यंग इण्डिया' में गाँधी जी ने बिना सोचे समझे आर्यसमाज, ऋषि दयानन्द, सत्यार्थप्रकाश व स्वामी श्रद्धानन्द की खूब निन्दा की। उन लेखों ने मुसलमानों के अहं को बढ़ाया और आर्यसमाज की छवि धूमिल कर दी। पं० चमूपति जैसे विद्वानों ने गाँधी जी की भ्रांति का निवारण करने के लिए गाँधी जी को सैंकड़ों पत्र लिखे। इससे गाँधी जी चौंक गये और अपनी गलती का सुधार किया, पर मुस्लिम समाज पर तो पहली बात ही जम गई थी। अतः मतान्ध मुस्लिम स्वामी जी को फँसाने का मौका ढूँढने लगे।

दिल्ली में बकरीद पर गाय की कुर्बानी को लेकर बड़ा भयंकर दंगा हुआ। इसके प्रायश्चित रूप में गाँधी जी ने २१ दिन का उपवास रखा व कांग्रेस ने एकता सम्मेलन किया। लाला लाजपत राय के साथ स्वामी जी इसमें गये और आर्यसमाज पर किये गये आक्षेपों का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा-"यदि मुसलमान प्रचारक यह घोषणा कर दें कि वे तबलीग (पंथ प्रवेश) बन्द कर देंगे, तो आर्यसमाज भी समय और परिस्थिति को देखते हुए उतनी देर के लिए शुद्धि आंदोलन को स्थगित करने पर विचार कर सकता है।" इस पर कोई मुसलमान नेता यह घोषणा करने को तैयार नहीं हुआ और कांग्रेस के किसी भी नेता ने उन्हें यह कहने की हिम्मत नहीं दिखाई। २ अक्तूबर १९२४ के इस सम्मेलन ने साम्प्रदायिक मुस्लिमों के मन में यह अच्छी तरह बैठा दिया कि एकता भंग करने वाला आर्य समाज का शुद्धि आंदोलन है।

जून १९२६ में कराची से अपने पुत्रों (दो) व भतीजे के साथ दिल्ली आर्यसमाज में आई एक मुस्लिम महिला असगरी बेगम ने हिन्दू धर्म स्वीकार करने की इच्छा प्रकट की। उसकी शुद्धि कर शान्ति देवी नाम रखा गया। बाद में उसका पति उसे वापस लेने आया तो उसने जाने से मना कर दिया। स्थानीय मुस्लिमों से भड़काये जाने पर उसके पति ने स्वामी जी तथा ५ अन्य व्यक्तियों पर मुकदमा कर दिया। ६ महीने बाद (४ दिसम्बर) सब अभियुक्त बरी कर दिये गये।

मुकदमे के दौरान भी स्वामी जी के पास कई गुमनाम पत्र आये, जिनमें मारने की धमकी दी गई थी। उनके बेदाग छूट जाने पर तो सुलगी हुई आग और जोरों से भड़क उठी। स्वामी जी को खून करने की धमकियों के और भी गुमनाम पत्र आने लगे, पर स्वामी जी उन सबकी उपेक्षा करते रहे, क्योंकि धमकी से डरना उनके स्वभाव में नहीं था। हाँ, नया शरीर धारण कर शुद्धि कार्य को आगे बढ़ाने की इच्छा कई बार व्यक्त की थी।

इन दिनों स्वामी जी निमोनिया से पीड़ित थे। २३ दिसम्बर को एक युवक अब्दुल रशीद स्वामी जी मिलने आया और बोला- स्वामी जी, मैं आपसे इस्लाम के मुतल्लिक कुछ गुफ्तगु करना चाहता हूँ। स्वामी जी ने कहा-'भाई, मैं बिमार हूँ, तुम्हारी दुआ से राजी हो जाऊँगा तो बात करूँगा।' पानी माँगने पर स्वामी जी के आदेश से सेवक धर्मसिंह ने उसे पानी पिलाया। पानी पीकर भीतर आते ही उस हत्यारे ने स्वामी जी पर पिस्तौल की दो गोलियाँ दाग दीं। लपक कर सेवक ने उस हत्यारे को पीछे से पकड़ा, इतने में उसने तीसरा फायर भी कर दिया। एक गोली धर्मसिंह की रान में भी मार दी। इतने में धर्मपाल विद्यालंकार ने हत्यारे को दबोच लिया और पुलिस के आने तक (आधा घण्टा) दबाए रखा। हत्यारे पर मुकदमा चला और उसे फाँसी की सजा हुई।

सामूहिक षड्यंत्र-

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति ने 'मेरे पिता' में लिखा है-"अब्दुल रशीद ने उठकर चारों ओर देखा कि उसकी नजर डाक्टर अन्सारी (स्वामी जी का बहुत ही प्रिय व श्रद्धालु डाक्टर) पर पड़ी। वह डाक्टर जी को देखकर मुस्कुराया और काफी ऊँचे स्वरों में उसने कहा-"डाक्टर साहिब, आदाब अर्ज।' बाद में तहकीकात करने पर मालूम हुआ कि अब्दुल रशीद ने अपने खूनी संकल्प की सूचना बहुत से प्रतिष्ठित मुसलमानों को दे रखी थी। उनमें से कुछ ने उसे रोका और कुछ ने प्रोत्साहित किया। डाक्टर साहब उनमें से थे, जिन्होंने उसे रोका था। वह कई महीनों से विधिपूर्वक नृशंसता की तैयारी कर रहा था। इस कार्य के समर्थन में उसने उलेमाओं का फतवा तक ले लिया था।

इतनी हल्की सी मुस्कुराहट के पश्चात् अब्दुल रशीद के चेहरे पर एक गम्भीर मुर्दानी छा गई। वह उसके चेहरे का स्थायी भाव था, जो तब तक कायम रहा, जब तक वह जेल में फाँसी की रस्सी से झूलकर कर्मफल पाने के लिए बड़े दरबार में नहीं चला गया।"

पं० अयोध्या प्रसाद बी०ए० ने 'स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या' में लिखा है–"मौलाना आजाद ने कह दिया कि घातक (अब्दुल रशीद) पागल है और अदालत में उसे सचमुच पागल सिद्ध करने का यत्न किया गया है। पर हत्या के पीछे की घटनाओं से यह साफ सिद्ध हो गया है कि अब्दुल रशीद की सहायता के लिए लगभग सारे मुसलमान हैं। वे हाई कोर्ट की प्रीवि कौंसिल में उसकी पैरवी के लिए चन्दा दे रहे हैं।-- यदि स्वामी जी की हत्या एक मुसलमान के रोगी दिमाग का परिणाम होती तो स्वामीजी की अरथी पर पत्थर न बरसाये जाते और न अभियुक्त अब्दुल रशीद को गाज़ी बनाकर उसकी तस्वीरें दिल्ली, इलाहाबाद और मद्रास के बाजारों में बेचने की कोशिश की जाती। बंगलौर के मि० रजबी के यह कहने पर कि स्वामी श्रद्धानन्द जी का हत्यारा स्वर्ग में नहीं, नरक में जावेगा-- वहाँ के मुसलमानों ने पत्र द्वारा उनको यहाँ तक धमकी दी कि वे जब मरेंगे, उनको कबरिस्तान में नहीं गाड़ने दिया जावेगा। मेरठ में स्वामी जी के हत्या के दिन मुसलमानों ने रोशनी की। डॉ० सैफुद्दीन किचलू और मौ० मुहम्मद अली ने जामा मस्जिद में मुसलमानों से यह प्रार्थना करवाई थी कि अभियुक्त अब्दुल रशीद बेगुनाह साबित हो।

अभियुक्त अब्दुल रशीद का जो बयान हत्या के दिन अखबारों में छपा है उसमें उसने यह कहा है कि मैंने एक काफिर को मारा है और मैं बहिश्त में जाऊँगा। मौ० मुहम्मद अली कहते हैं कि यह बड़ा बहादुर है जो इस दिलेरी से कहता है कि हाँ मैंने कत्ल किया है। कितने ही प्रसिद्ध लेखकों और नेताओं तक ने स्वामी जी को इस्लाम का शत्रु कहा था और उनकी हत्या करने वाला उनको मारकर अपने विचार में 'गाज़ी' बना है।" (हत्या का उद्देश्य बहिश्त पाना ही था–यह शिक्षा है!)

प्रतिक्रिया

देश में जगह-जगह स्वामी जी की हत्या पर शोक सभाएँ हुईं, लोगों ने श्रद्धांजलियाँ दीं। वीर सावरकर ने 'संन्यासी की हत्या का स्मरण रखो' नामक लेख में लिखा–"हिन्दू जाति के पतन से दिन-रात तिलमिलाने वाले हे महाभाग संन्यासी! तुम्हारा परम पावन रक्त बहाकर तुमने हम हिन्दुओं को संजीवनी दी है। तुम्हारा यह ऋण हिन्दू जाति आमरण न भूल सकेगी। किन्तु हे हिन्दुओ! ऋण का भार केवल स्मरण करने से कम नहीं होता है। हिन्दू समाज में अल्पकाल में सामाजिक क्रांति लाने वाले संन्यासी शंकराचार्य के पश्चात् स्वामी श्रद्धानन्द ही निकले-- हुतात्मा की राख से अधिक शक्तिशाली भस्म इस संसार में अन्य कोई होगा क्या? वही भस्म, हे हिन्दूओ! फिर से अपने भाल पर लगाकर संघटना (संगठन) और शुद्धि का प्रचार-प्रसार करो और वीर संन्यासी की स्मृति और प्रेरणा हम सबके हृदयों में निरन्तर प्रज्वलित रहे, इसलिए उनका संदेश सुनो।"

गाँधी जी का रवैया

गाँधी जी ने 'यंग इंडिया' में लिखा–"मैं भाई अब्दुल रशीद नामक मुसलमान, जिसने श्रद्धानन्द की हत्या की है, का पक्ष लेकर कहना चाहता हूँ कि इस हत्या का दोष हमारा है। अब्दुल रशीद जिस धर्मोन्माद से पीड़ित था, उसका दायित्व हम लोगों पर है। द्वेषाग्नि भड़काने के लिए केवल मुसलमान ही नहीं, हिन्दू भी दोषी हैं।"

क्रांतिकारियों के बार-बार निवेदन करने पर भी उन्हें आतंकवादी कहने से न मानने वाले महात्मा द्वारा महान् संन्यासी के हत्यारे के प्रति सहानुभूति दिखाने पर वीर सावरकर ने २० जनवरी १९२७ के 'श्रद्धानन्द' के अंक में लिखा–"गाँधी जी ने अपने को शुद्ध हृदय 'महात्मा' तथा निष्पक्ष सिद्ध करने के लिए एक मजहबी उन्मादी हत्यारे के प्रति सहानुभूति व्यक्त की है। वे स्वामी श्रद्धानन्द जी जैसे राष्ट्रभक्त की हत्या के लिए उन्हीं की विचारधारा अर्थात् दृढ़ हिन्दुत्व निष्ठा तथा शुद्धि कार्य को जिम्मेदार सिद्ध करना चाहते हैं। मालाबार के मोपला हत्यारों के प्रति वे पहले ऐसे ही सहानुभूति दिखा चुके हैं।"

इसी समय वैदिक विद्वान् पं० देवेश्वर जी सिद्धान्तालंकार ने महात्मा गाँधी जी से सीधा पत्र व्यवहार किया और उन्हें हत्यारे अब्दुल रशीद के प्रति सहानूभूति न दर्शाने का निवेदन किया, पर गाँधी जी अपनी हठ पर अड़े रहे। हत्यारे के प्रति गाँधी जी के करुणा भाव भी उसे फाँसी से नहीं बचा सके, पर गाँधी जी के लेखों से सहानुभूति और प्रेरणा पाए लोगों ने कुछ महीने बाद ही (२६ सितम्बर १९२७) महाशय राजपाल को छुरा मार दिया और तीसरी बार ६ अप्रैल १९२९ को तो उन्हें शहीद कर ही दिया। आज की राजनीति में शायद इसे ही अहिंसा और भाईचारा कहा जाता है और दूसरे सम्प्रदाय के लोगों की हत्या कर जन्नत (स्वर्ग) पाना ही मजहबी शिक्षा है।

आज की राजनीति में शायद इसे ही अहिंसा और भाईचारा कहा जाता है और दूसरे सम्प्रदाय के लोगों की हत्या कर जन्नत पाना ही मजहबी शिक्षा है।

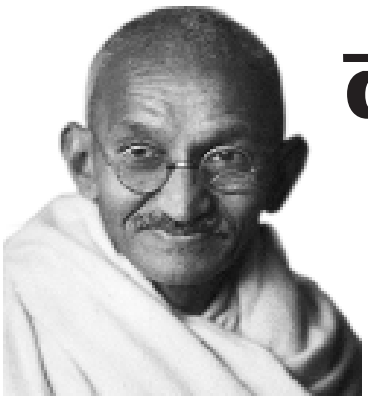

दो महात्मा समानताएँ और अन्तर

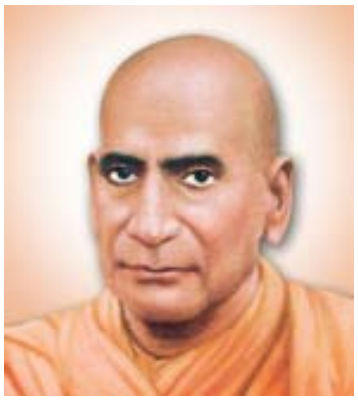

❒राजेश आर्य आट्टा

गांधी जी की हत्या से लगभग २१ वर्ष पहले भी एक महात्मा की हत्या की गई थी। वे थे महात्मा मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द), जिन्हें गांधी जी अपना बड़ा भाई कहते थे; जिन्होंने दलितोद्धार द्वारा राष्ट्र को सामाजिक; व शुद्धि आंदोलन से मजहबी गुलामी से स्वतंत्र कराने के लिए अपना बलिदान दिया।

इन दोनों महात्माओं के जीवन में कुछ समानताएं थीं। ये दोनों महात्मा अपने दुर्व्यसनों को पछाड़ कर ऊँचे उठे थे। दोनों वकील थे। दोनों की सत्य पर आस्था थी। दोनों समाज में आदरणीय थे। दोनों अहिंसावादी, आस्तिक व त्यागी थे। दोनों का उद्देश्य समाज व राष्ट्र उत्थान था। दोनों छुआछूत विरोधी थे। दोनों देशभक्त थे। दोनों की हत्या वृद्धावस्था में की गई थी। दोनों के हत्यारों को फाँसी मिली थी।

इतनी समानताएँ होते हुए भी दोनों में कुछ गंभीर प्रकृति की असमानताएँ भी थीं। यथा:

१–गांधी जी समय–समय पर अंग्रेजों से सहयोग लेते व देते रहते थे। दक्षिण अफ्रीका के बोअर तथा जुलु युद्धों में अंग्रेजों की सहायता करने के कारण अंग्रेजों ने १९१५ में उन्हे 'केसर–ए–हिन्द' का पदक दिया था। जबकि महात्मा मुंशीराम ने गुरुकुल कांगड़ी में सरकारी (अंग्रेजी) पाठ्यक्रम लागू करने के बदले मिलने वाली सरकारी सहायता को ठुकरा दिया था।

२– गांधीजी राजनीति के कारण प्रसिद्ध हुए। (सम्भवत:) इसमें अंग्रेजों का हाथ हो, क्योंकि गांधी जी का अहिंसा अस्त्र अंग्रेजों की ढाल था। जबकि महात्मा मुंशीराम अपनी त्याग–तपस्या से प्रसिद्ध हुए।

३– महात्मा मुंशीराम लगभग ३६ वर्ष की अवस्था में वानप्रस्थी और ६० वर्ष की अवस्था में संन्यासी बन गये, जबकि गांधी जी अंतिम समय (७८ वर्ष) तक गृहस्थी ही रहे। यद्यपि कस्तूरबा का देहान्त १९४४ ई० में हो गया था।

४– गांधी जी ने हिन्दुओं के साथ–साथ मुस्लिमों का भी पूज्य बनने लिए सिद्धान्त हीनता (मुस्लिम तुष्टीकरण) का सहारा लिया, जबकि स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने सिद्धांतों पर दृढ़ रहते हुए जामा मस्जिद में वेद मंत्र बोलकर हिन्दू–मुस्लिम एकता का संदेश दिया।

५–गांधी जी मुसलमानों को स्वतंत्रता संग्राम में सहयोगी बनाने के लिए उनकी हर उचित–अनुचित माँग मानकर उनकी अलगाववादी भावना को बढ़ाते रहे, जो पाकिस्तान लेकर भी शांत नहीं हुई। जबकि स्वामी श्रद्धानन्द खिलाफत आंदोलन की असफलता से उत्पन्न मोपला विद्रोह (मालाबार) में मुस्लिमों द्वारा किये गये हिन्दुओं के कत्ले आम, आगजनी व धर्म–परिवर्तन को देखकर न केवल खिलाफत से अलग हुए, अपितु शुद्धि (मुस्लिमों को पुन: हिन्दु बनाना) और दलितोद्धार (दलितों का सामाजिक व आर्थिक शोषण बंद कर समानता का अधिकार देना) को बढ़ावा देकर उन मुल्लाओं (मोहम्मद अली व शौकत अली) के सपनों पर पानी फेरने लगे, जो सात करोड़ दलितों को हिन्दु–मुस्लिम में आधा–आधा बाँटने की योजना बना रहे थे।

६– गांधी जी देश को स्वतंत्र कराने के लिए बार–बार आन्दोलन चलाते थे, पर अंग्रेजों को मुसीबत में देखकर आंदोलन वापिस ले लेते थे। उनकी इस नीति के कारण लाला लाजपतराय, सुभाष चन्द्र बोस, भगतसिंह, मोतीलाल नेहरू, मदनमोहन मालवीय जैसे क्रांतिकारी व अहिंसावादी भी उनसे अलग हो गये। यहाँ तक कि मोहम्मद अली जिन्ना जैसा राष्ट्रवादी व्यक्ति भी कट्टर अलगाववादी बन गया। जबकि स्वामी श्रद्धानन्द ने गहरे मतभेद होते हुए भी देश–धर्म के हितैषी लोगों (लाला लाजपत राय, महात्मा

हंसराज आदि) को सदा साथ रखा। दलितोद्धार के प्रश्न पर कांग्रेस से मतभेद होने के कारण त्यागपत्र दे दिया, फिर भी कांग्रेस के अधिवेशनों में अपना संदेश भेजते रहे, ताकि दलितोद्धार कांग्रेस का विषय बन जाये और दलितों का जीवन स्तर ऊँचा उठे। बलिदान से एक दिन पहले (२२ दिसम्बर १९२६ ई०) भी स्वामी जी ने गोहाटी के कांग्रेस अधिवेशन में अपना संदेश भेजा था–'भारत का भावी सुख हिन्दू–मुस्लिम एकता पर आश्रित है।'

७–गाँधी जी पौराणिक धर्म की मान्यताओं (मूर्ति पूजा, जन्मना वर्ण व्यवस्था आदि) को मानते थे, जबकि स्वामी जी वैदिक मान्यताओं (निराकार ईश्वर, कर्मणा वर्णव्यवस्था आदि) को मानते थे।

बलिदान से कुछ दिन पहले कर्नाटक के साहित्यकार डॉ० कारंत ने स्वामी जी को पत्र लिखकर पूछा था कि बाल विधवाएँ क्या सारा जीवन विधवा के रूप में बिताएँ अथवा इनका पुनर्विवाह होना चाहिए? स्वामी जी ने शास्त्रों का प्रमाण देकर इन्द्र जी (सुपुत्र) से उक्त सज्जन को उत्तर भेजा कि इनमें से जो भी विवाह करना चाहें, उसका पुनर्विवाह होना ही चाहिए।

इससे पूर्व भी ऐसा ही पत्र उन्होंने गाँधी जी को लिखा था। गाँधी जी ने उत्तर दिया था कि ऐसी स्त्रियों को सदाचार पूर्वक जीवन बिताना चाहिए। जबकि स्वामी जी तो १८९६ ई० से ही 'सद्धर्म प्रचारक' में बाल विधवाओं के पुनर्विवाह के समर्थन में दिल खोलकर लिखते रहे–

"तुम्हारे पूर्वज कह गए हैं कि एक विधवा की आह एक इलाके को जला देने के लिए पर्याप्त है। यहाँ २५ लाख विधवाओं की आहें नित्य भारतवर्ष में उठकर इकट्ठी ताकत पकड़ती हुई अन्तरिक्ष में कोलाहल मचा रही हैं।" लेखमाला के अन्त में तो उन्होंने जैसे अपना कलेजा चीरकर ही रख दिया था–"मेरी दुखियारी विधवा बहिनो, मैंने तुम्हारा दर्दनाक संदेश भारत–सन्तान तक पहुँचा दिया है। काश कि मुझसे अधिक बेहतर फसीह (सुवक्ता) वकील तुम्हें मिलता।"

८–नेहरू जी के समाजवादी विचारों से गाँधी जी का सदा टकराव रहा, पर गाँधी जी ने उन्हें बिल्कुल नहीं छोड़ा और नेहरू जी गाँधी जी को सत्ता पाने की सीढ़ी मानते थे, अतः साथ रहे। गाँधी जी ने भी अपने शिष्य को निराश नहीं होने दिया, इसके लिए चाहे राष्ट्र–हित की बलि देनी पड़ी। सरदार पटेल जैसे योग्य व लोकप्रिय व्यक्ति को पीछे हटाकर नेहरू जी को कांग्रेस का अध्यक्ष (प्रधानमंत्री) बनाया, फिर भी उन्हें निराश होकर यह कहना पड़ा कि मेरी कोई नहीं सुनता। जबकि स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल के हित को प्राथमिकता देकर अपनी प्रेस, पुस्तकालय व कोठी भी गुरुकुल को दान कर दी। समाज के हित को देखते हुए पुत्र जैसे प्रिय गुरुकुल कांगड़ी को भी छोड़ दिया। राष्ट्रहित की उपेक्षा (मुस्लिम तुटीकरण) होती दिखाई दी, तो उन्होंने कांग्रेस को भी छोड़ दिया। जब देखा हिन्दू महासभा ठीक से काम नहीं कर रही है तो उन्होंने उसे भी छोड़ दिया (२४ जून १९२५)।

एक बार लाला हरदेव सहाय स्वामी जी से मिलने दिल्ली (बलिदान भवन) गये। स्वामी जी वहाँ अकेले थे। लाला जी ने कहा–"पहले गाँधी जी आदि सब नेता आपके पास आया करते थे। आपको क्या मिला? आप अकेले पड़ गये (शुद्धि आन्दोलन के कारण)।" स्वामी जी लेटे हुए थे। झट से उठकर बैठ गए और बोले–"मैं अकेला कैसे? सत्य मेरे साथ, परमात्मा मेरे साथ!! मैंने जो कुछ किया है देश व जाति की रक्षा के लिए किया है। कोई आए ना आए, मुझे इसकी कतई चिंता नहीं। मेरा जीवन देश को अर्पण है।"

९–गाँधी जी की हत्या स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद एक कट्टर हिन्दू द्वारा की गई थी, जबकि स्वामी जी की हत्या अंग्रेजी शासन में एक कट्टर मुस्लिम द्वारा की गई थी।

१०–गाँधी जी की हत्या का कारण राष्ट्रहित को बचाना बताया जाता है, जबकि स्वामी जी की हत्या का कारण मजहब की सुरक्षा था अथवा काफिर को मारकर जन्नत (स्वर्ग) पाना था।

११–गाँधी जी की हत्या के षड्यंत्र में एक–दो व्यक्ति ही शामिल रहे होंगे, जबकि स्वामी जी की हत्या में परोक्ष रूप से एक मजहब के वरिष्ठ लोग भी शामिल थे।

१२–गाँधी जी की हत्या की आड़ में सरकार द्वारा राजनैतिक स्वार्थ पूरा करने के लिए वीर सावरकर जैसे सच्चे देशभक्त भी हत्या के षड्यंत्र का आरोप लगाकर जेल में डाले गये और दो आरोपियों को फाँसी व तीन को आजीवन कारावास दिया गया। जबकि स्वामी जी के हत्यारे को ही फाँसी दी गई थी।

१३– कथित धर्मनिरपेक्षतावादियों द्वारा गाँधी जी की हत्या के लिए सदा से हिन्दू साम्प्रदायिकता को दोषी ठहराया जाता रहा है, जबकि स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या के लिए मुस्लिम साम्प्रदायिकता को दोषी ठहराने की उनकी हिम्मत नहीं होती।

हमारा विचार दो महात्माओं की तुलना करके किसी को नीचा या ऊँचा सिद्ध करने का नहीं है, हमारा उद्देश्य केवल कुछ तथ्यों पर प्रकाश डालना है ताकि बुद्धिमान् पाठक विचार करें कि इतिहास में पक्षपात द्वारा किस प्रकार नायकों को बनाया या भुलाया करता है।

ब्रह्मयज्ञ
वैदिक संध्या
(हिन्दी पद्यानुवाद)

अनुवादक :
स्व० श्री बलदेव शास्त्री न्यायतीर्थ
(मेहवड़, जिला रुड़की)

**ओं शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभि स्रवन्तु नः।।१।।**

जो सब जगत् में व्याप्त, रवि शशि को प्रकाशित है किए,
निज इष्ट फल आनन्द रस का पान करने के लिए।।
सुख रूप वह कल्याणमय कल्याणकारी है सदा,
हर ओर से हम पर करे आनन्द वर्षा सर्वदा।।

ओ३म् वाक् वाक्। ओं प्राणः प्राणः। ओं चक्षुश्चक्षुः। ओं श्रोत्रं श्रोत्रम्। ओं नाभिः। ओं हृदयम्। ओं कण्ठः। ओं शिरः। ओं बाहुभ्यां यशोबलम्। ओं करतलकरपृष्ठे।

हे ईश मेरे प्राण वाणी, शक्त दोनों कान हों।
सिर, आंख, कंठ, हृदय तथा नाभि सभी बलवान हों।।
यश, बल अनंत अनादि भगवन भुज-युगल धारण करें।
मेरी हथेली हाथ की औ' पीठ बल धारण करें।।

ओ३म् भूः पुनातु शिरसि। ओं भुवः पुनातु नेत्रयोः। ओं स्वः पुनातु कण्ठे। ओं महः पुनातु हृदये। ओं जनः पुनातु नाभ्याम्। ओं तपः पुनातु पादयोः। ओं सत्यं पुनातु पुनः शिरसि। ओं खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र।।

वह प्राणवान् भगवान् मेरे शीश को पावन करे,
वह दुख दलन सर्वेश मेरे दृष्टि के दूषण हरे।।
आनन्दमय परमेश मेरे कंठ को निर्मल करे,
है जो बड़ा सबसे वही अखिलेश मन का मल हरे।।
तुम सर्वकर्त्ता ईश! मेरी नाभि को पावन करो।
दुरजन दलन करुणेश! तुम मम पद-युगल-दूषण हरो।।
तुम ईश! अविनाशी सदा मम शीश फिर पावन करो,
तुम सर्वव्यापक ब्रह्म हो, सब दोष अंगों का हरो।।

ओ३म् भूः। ओं भुवः। ओं स्वः। ओं महः। ओं जनः। ओं तपः। ओं सत्यम्।।

तुम प्राणमय सर्वेश सबके दुःखहर्त्ता सिद्ध हो,
सुखरूप तुम संसार में सबसे महान् प्रसिद्ध हो।।
इस सृष्टि के कर्त्ता तुम्हीं करुणेश करुणारूप हो,
तुम दुर्जनों के दुःखदाता नित्य सत्य स्वरूप हो।।

**ओ३म् ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः।।**

इस ज्ञानमय प्रभु ने प्रथम निज ज्ञान को विस्तृत किया,
फिर कार्यरूप प्रकृति को झट जन्म विभु ने है दिया।।
सामर्थ्य से उस ईश की होता प्रकृति संहार है,
सर्वेश की ही शक्ति से नभ-भूमि-जल संचार है।।

ओं समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी।।

जल के अनन्तर फिर अहो! उस ईश करुणाधीश ने,
जग के नियामक सृष्टिकर्ता उस पिता जगदीश ने।।
निज प्रेरणा से ही किया यह काल का निर्माण है,
ये वर्ष दिन, रजनी तथा जिसका विभाग-विधान है।।

ओं सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।।

उस ईश ने ही सृष्टि जो सम्पूर्ण धारण कर रहा,
रवि शशि अतल तारे तथा आकाश लोकांतर अहा!!
ये सब बनाये शक्ति से निज पूर्ण कल्प समान हैं,
जो कर रहे उस ईश के ऐश्वर्य का आख्यान हैं।।

ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभिस्रवन्तु नः।।

ओ३म् प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो
नम एभ्यो अस्तु। यो३ऽस्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो
जम्भे दध्मः।।१।।

सर्वज्ञ प्राची में तुम्हीं रक्षक नृपति स्वच्छंद हो,
तुम रवि किरण के बाण से हरते सदा दुख द्वन्द्व हो।।
इनके लिए आगे तुम्हारे हाथ हैं हम जोड़ते,
जो द्वेष करते, हम जिन्हें, उनको तुम्हीं पर छोड़ते।।

दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर
इषवः। तेभ्यो --।।२।।

सर्वेश दक्षिण ओर तुम ही व्याप्त देव महान हो,
सर्पादि से देते अभय तुम ज्ञानियों के ज्ञान हो।।
इनके लिए आगे तुम्हारे हाथ हैं हम जोड़ते।
जो द्वेष करते, हम जिन्हें, उनको तुम्हीं पर छोड़ते।।

ओं प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू
रक्षितान्नमिषवः। तेभ्यो --।।३।।

पीछे तुम्हीं सौंदर्य के आगार सुन्दर रूप हो,
विश्व प्राणियों से प्राण रखते, अन्नदाता भूप हो।
इनके लिये आगे तुम्हारे हाथ हैं हम जोड़ते,
जो द्वेष करते, हम जिन्हें, उनको तुम्हीं पर छोड़ते।

ओं उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो
रक्षिताशनिरिषवः तेभ्यो --।।४।।

तुम ही अजन्मा सोम बाईं ओर व्यापक हो रहे,
रख प्राण विद्युत् में तुम्हीं सर्वेश! सब भय खो रहे।
इनके लिए आगे तुम्हारे हाथ हैं हम जोड़ते,
जो द्वेष करते, हम जिन्हें, उनको तुम्हीं पर छोड़ते।।

ओं ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता
वीरुध इषवः। तेभ्यो --।।५।।

हे सर्वव्यापक ईश! नीचे भी तुम्हीं हो सोहते,
तरु हरित बेलों से तुम्हीं रख प्राण नृप मन मोहते।।
इनके लिए आगे तुम्हारे हाथ हैं हम जोड़ते,
जो द्वेष करते, हम जिन्हें, उनको तुम्हीं पर छोड़ते।।

ओं ऊर्ध्वा दिग्बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता
वर्षमिषवः। तेभ्यो --।।६।।

हे विश्वपति! ऊपर तुम्हीं व्यापक पवित्र महान हो,
रक्षक तुम्हीं करते सदा कृषि के लिए जल दान हो।
इनके लिए आगे तुम्हारे हाथ हैं हम जोड़ते,
जो द्वेष करते, हम जिन्हें, उनको तुम्हीं पर छोड़ते।

ओं उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।।

तम से परे सुखरूप पीछे भी प्रलय के तुम रहो,
तुम दिव्य-गुण, सर्वत्र व्यापक, देव! जग-कारण अहो!!
इस विधि तुम्हारा हम अलौकिक रूप तात! निहारते,
हों प्राप्त उत्तम ज्योति को हम सब तुम्हारी जगपते!!

ओं उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः।
दृशे विश्वाय सूर्यम्।।

विश्वेश! तुमने ही दिया, संसार को सब ज्ञान है,
हो तुम प्रकाश-स्वरूप, तुमसे दीप्त, विश्व महान है।।
सब केतु सम ही दीखते, जग में विशाल पदार्थ हैं,
देते तुम्हारी शक्ति का जो ज्ञान ईश! यथार्थ हैं।।

ओं चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आ प्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्ष१ सूर्यऽआत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा।।

हे ईश! विद्वद् वृंद के बल दिव्य अद्भुत रूप हो,
तुम रवि वरुण अनलादि के भगवन! प्रकाशस्वरूप हो।।
धारण तुम्हीं हो कर रहे नभ, भूमि, मध्यम लोक भी,
तुम सूर्य के भी प्राण कारण, प्राप्त हों तुमको सभी।।

ओं तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शत१ जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।।

हे! सर्वदर्शी! तुम सदा सर्वज्ञ जन जग के लिये,
हितकर पवित्र विराजते, सौ वर्ष हम देखें जिएं।।
तुमको सुनें सौ वर्ष तक, सौ वर्ष तव गुण गण कहें।
निज तंत्र हो सौ वर्ष इससे भी अधिक यों ही रहें।।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

तुम प्राण सुखमय दुःख दलन सर्वज्ञ जग कारण अहो,
हे देव! उत्तम ज्ञानमय तव रूप का ही ध्यान हो।।
जिससे हमारी इंद्रियां तज ध्यान सब दुष्कर्म का,
हों पुण्य रत स्वीकार कर शुभ मार्ग अति सद्धर्म का।।

समर्पणम् - हे ईश्वर दयानिधे ! भवत्कृपयाऽनेन जपोपासनादिकर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः।।

ओ३म् नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।।

सुख रूप! उत्तम सौख्यदाता, देव-देव! प्रणाम है,
करते तुम्हीं जग को सुखी, शंकर तुम्हारा नाम है।।
हे मोक्ष-सुख-दायी। तुम्हीं जगदीश! पुण्य प्रणाम है,
अत्यंत मंगलमय तुम्हें हे ईश! पुण्य प्रणाम है।।

प्रस्तोत्री : कुमारी वैशाली सैनी, सहारनपुर

खोजती है आज श्रद्धानन्द को मेरी निराशा

रचयिता- श्री प्रो० उत्तम चन्द्र जी शरर

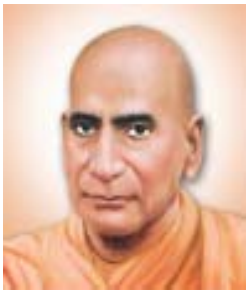

उफ वह निर्भयता कि नेजों से भी छाती को अड़ाना,
उफ वह तन्मयता कि सब घर-बार हंस-२ कर लुटाना।
वह हृदय का ब्रत कि दृढ़ता में पहाड़ों को झुकाना,
मौत की आंखों में आंखें डाल कर भी मुस्कराना।।

कौन है जो आज अपने स्वार्थ की बढ़कर हवि दे,
वेद के इस परम पावन यज्ञ में अपनी बलि दे।
अग्नि की बुझती हुई चिन्गारियां यूं पूछती हैं-
है कोई ऐसा जो समिधा बन हमें जीवन-गति दे?

कौन है जो आज उपवन को उजड़ने से बचाए?
तिमिर पारावार में बन सूर्य रश्मि मुस्कराए।
खा तरंगों के थपेड़े पार नौका को लगाए,
गोलियों की बाढ़ में भी है कोई जो पग बढ़ाए?

प्रश्न है क्या यों हमारे देखते उजड़ेगा उपवन?
प्रश्न है- होगा? हमारी भीरूता का यों प्रदर्शन?
प्रश्न है क्या यों ऋषि का स्वप्न पूरा हो सकेगा?
प्रश्न का ही चिह्न बन कर रह गया है आज जीवन।

पाप का अज्ञान का फिर आज है घर-घर में डेरा,
सूर्य रश्मि को चुनौती दे रहा है फिर अन्धेरा।
आज कवि का रुदन करता मन यह फिर-२ पूछता है
है कोई जो इस निशा को चीर कर लाए सवेरा।

खोजती है आज श्रद्धानन्द को मेरी निराशा!

आत्म-चिन्तन

वेद के सर्वहितकारी उपदेश

जो मनुष्य सब का उपकार करने और सुख देने वाले हैं,
उन्हीं पर वह दयालु परमात्मा सदा कृपा करता है।

❑**देवराज आर्य,** सेवानिवृत्त मुख्याध्यापक

संगच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।। ऋग्वेद ८/८/४९/२

पदार्थ : (सं गच्छध्वं) परमेश्वर हम सभी के लिए धर्म का उपदेश करते हैं कि हे मनुष्य लोगो! तुम आपस का विरोध छोड़कर परस्पर सम्मति में रहो तथा जो पक्षपातरहित न्याय सत्याचरण से युक्त धर्म है, उसी को ग्रहण करो, जिससे तुम्हारा उत्तम सुख सब दिन बढ़ता जाये और किसी प्रकार का दु:ख न हो।

(सं वदध्वं) तुम लोग आपस में विरुद्ध वाद को छोड़कर आपस में प्रीति के साथ पढ़ना पढ़ाना, प्रश्न-उत्तर सहित संवाद सदा किया करो, जिससे तुम्हारी सत्यविद्या नित्य बढ़ती रहे। (सं वो मनांसि जानताम्) तुम लोग अपने यथार्थ ज्ञान को नित्य बढ़ाते रहो, जिससे तुम्हारा मन प्रकाश युक्त होकर पुरुषार्थ को बढ़ाता रहे, जिससे तुम लोग ज्ञानी होके नित्य आनन्द में बने रहो। तुम लोगों को धर्म का ही सेवन करना चाहिए, अधर्म का नहीं। (देवा भागं यथा०) जैसे पक्षपातरहित धर्मात्मा विद्वान लोग वेद रीति से सत्य धर्म का आचरण करते हैं, उसी प्रकार तुम भी करो।

प्रश्न : धर्म का ज्ञान कितने प्रकार से होता है?

उत्तर : धर्म का ज्ञान तीन प्रकार से होता है- एक तो धर्मात्मा विद्वानों की शिक्षा अर्थात् वैदिक विद्वानों के सत्संग द्वारा। दूसरा आत्मा की शुद्धि तथा सत्य को जानने की इच्छा और तीसरा परमेश्वर की कही वेद-विद्या को जानने से ही धर्म का यथार्थ ज्ञान होता है।

ऊपर वेद मन्त्र में बताया गया है कि हम सब धर्म के मार्ग पर चल कर ही सुखी हो सकते हैं। केवल धर्म का ज्ञान हो जाने से कोई भी व्यक्ति कभी भी सुखी नहीं हो सकता। आज हम और आप धर्म के बारे में खूब चर्चा में सुनते हैं। कहीं बैठ जाओ- आर्य समाज हो या कोई मन्दिर, धर्मशाला हो या विद्यालय, रेल की यात्रा हो चाहे बस की, घर हो या परिवार, पास पड़ौस हो या मित्र मण्डली, अधिकारी हों या सदस्य, धर्म की चर्चा चलते ही सब अपने आपको विद्वान, धर्मात्मा एवं प्रबुद्ध ज्ञानी सिद्ध करना आरम्भ कर देते हैं।

सच्चे और व्यवहारी बनो, सब जगह यह शोर है।
पर खूब कहना और है, और खूब करना और है।

कहने के लिये तो सब अपने आपको सच्चे, व्यवहारी, धर्मात्मा तथा ज्ञानी बताते हैं। धर्म की परिभाषा भी खूब दी जाती है। परन्तु जब ज्ञान को क्रिया में परिवर्तित करने की बात आती है तो सच्चे धर्मात्माओं की संख्या का प्रतिशत बहुत कम हो जाता है।

सब दिन सुखी रहें, इसके लिए क्या करना होगा? सबसे प्रथम बात है कि हम आपस में मिल कर रहें, हमारी सम्मति एक हो, हमारी चाल एक हो, हमारा आपस में किसी प्रकार का विरोध न हो। किसी ने सच कहा है कि-

जहां सम्मति तंह सम्पद् नाना,
जहां कुमति तंह विपद् निधाना'

सम्मति के साथ ही अनेक प्रकार की सम्पत्ति का संग्रह होना आरंभ हो जाता है। जहाँ मेल मिलाप नहीं होता वहाँ विनाश, दु:ख, कष्ट, क्लेश, तनाव और खिन्नता अर्थात् पतन आरम्भ हो जाता है। ऐसा क्यों होता है? क्योंकि वहाँ धर्म नहीं है। जहाँ पक्षपात किया जाता है, अपने और पराये का जहाँ भेद है, अन्याय का जहाँ व्यवहार होता है तथा अधर्म से धर्म को जहाँ कुचल दिया जाता है, वहाँ सुख की आशा करना व्यर्थ है। मनु महाराज कहते हैं-

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षित:।
तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मा नो धर्मो हतोऽवधीत्।।८/१५

मारा हुआ धर्म मारने वाला का नाश और रक्षित किया हुआ धर्म रक्षक की रक्षा करता है। इसलिए धर्म का हनन कभी न करना। इस डर से कि मारा हुआ धर्म कभी

हमको न मार डाले। हमे सदैव धर्म के मार्ग पर चल कर परस्पर सम्मति से रहते हुए सुख की वृद्धि करनी चाहिए।

धर्म जो कि सभी के लिए सुख कारक है उसकी वृद्धि के लिए क्या करें? (सं वदध्वं) आपस में प्रीति के साथ पढ़ना-पढ़ाना तथा सत्य विद्या की वृद्धि के लिए प्रश्न-उत्तर द्वारा वैदिक ज्ञान तथा सत्य धर्म की वृद्धि करनी चाहिए। ज्ञान और धर्म के द्वारा ही मनुष्य मात्र का कल्याण संभव है। इसके साथ ही (सं वो मनांसि जानताम्) तुम लोग अपने यथार्थ ज्ञान को नित्य बढ़ाते रहो, जिससे तुम लोग ज्ञानी हो के नित्य आनन्द में बने रहो तथा तुम्हारा मन प्रकाशयुक्त होकर पुरुषार्थ को बढ़ाता रहे।

ज्ञान और धर्म के मार्ग पर चलने के लिए हम किसका अनुकरण करें?

(देवा भागं यथा०) इसके लिए हम पक्षपात रहित, धर्मात्मा, विद्वान लोगों का अनुकरण करें, जो वेदानुकूल सत्य धर्म का आचरण करते आये हैं। इससे हमारी वेद धर्म और परमेश्वर में रुचि बढ़ेगी। हमारा मन शान्त एवं बुद्धि सात्त्विक मार्ग पर चल कर हमें सदैव सुख शान्ति प्रदान करती रहेगी।

प्रश्न : परमात्मा किन पर कृपा करता है?

उत्तर :

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।।

ऋ०८/८/४९/३

पदार्थ : (समानो मन्त्रः) मन्त्र का अर्थ होता है विचार। हे मनुष्य लोगो! तुम्हारा मन्त्र अर्थात् सत्य असत्य का विचार समान हो। उसमें किसी प्रकार का विरोध न हो। जो जो धर्म-युक्त और सब के हित के कार्य हों उनको सर्व सम्मति से मान कर सबके सुख को बढ़ाया करो।

(समितिः समानी) जिसमे समिति = सामाजिक नियम व्यवस्था अर्थात् सब मनुष्यों का मान, ज्ञान, विद्याभ्यास, अच्छे-२ काम, उत्तम मनुष्यों की सभा से समाज और राष्ट्र का उत्तम प्रबन्ध; बल, बुद्धि पराक्रम आदि श्रेष्ठ गुणों की वृद्धि तथा आचार व्यवहार की शुद्धि आदि जो उत्तम मर्यादायें हैं, सो भी तुम लोगों की एक ही प्रकार की हों, जिससे तुम्हारे श्रेष्ठ कार्य सिद्ध होते जायें।

(समानं मनः सह चित्तं) हे मनुष्य लोगो! तुम्हारा मन भी आपस में विरोध रहित हो तथा सब प्राणियों के दुःख के नाश और सुख की वृद्धि के लिए अपने आत्मा के समतुल्य जानना चाहिए अर्थात् आत्मनः प्रतिकूलानि परेषान्न समाचरेत्।।

प्रश्न : मन और चित्त क्या है?

उत्तर : शुभगुणों की प्राप्ति की इच्छा को 'संकल्प' और दुष्ट गुणों के त्याग की इच्छा को 'विकल्प' कहते हैं, जिससे जीवात्मा ये दोनों काम करता है, उसका नाम मन है। उससे सदा पुरुषार्थ करो। चित्त उसको कहते हैं कि जिससे सब अर्थों का स्मरण यथावत् बना रहे, वह भी तुम्हारा एक सा हो। इस प्रकार तुम्हारा मन और चित्त दोनों, सब मनुष्यों के सुख के लिए ही प्रयत्न में लगे रहें।

(एषां) इस प्रकार जो मनुष्य सब का उपकार करने और सुख देने वाले हैं, उन्हीं पर वह दयालु परमात्मा सदा कृपा करता है।

उस परमात्मा की दया तो संसार के सब जीवों पर है क्योंकि पापी और अधर्मी मनुष्यों को भी वह दयालु अन्न-जल, वायु तथा रहने की सभी सुविधायें प्रदान कर अपनी दयालुता का परिचय दे रहा है परन्तु उसकी कृपा उन्हीं को प्राप्त होती है जो धर्म युक्त मार्ग पर चलते हुए परमात्मा की आज्ञा का पालन करते हैं, जीव मात्र की भलाई के कार्यों को करते हुए अपने आचरण को पवित्र रख कर आस्तिक भावों के द्वारा संसार के कल्याण में रत रहते हैं। हमें उस ज्ञानदाता, जीवनदाता, दयालु परमात्मा की कृपा अवश्य प्राप्त करनी चाहिए।

(समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः) परमात्मा उनके लिये आशीर्वाद और आज्ञा देते हैं कि सब मनुष्य मेरी इस आज्ञा के अनुकूल चलें, जिससे उनका सत्य धर्म बढ़े और असत्य का नाश हो। जिन कामों को करने से परमात्मा का आशीर्वाद मिल जाये इससे बड़ी और कोई उपलब्धि हो ही नहीं सकती।

प्रश्न : क्या है परमात्मा की आज्ञा?

उत्तर : हम सभी मनुष्यों को उस न्यायकारी, दयालु, निराकार सर्वशक्तिमान् परमात्मा की प्रतिदिन सायं-प्रातः स्तुति उपासना, प्रार्थना अवश्य करनी चाहिए।

सत्य धर्म के आचरण को धारण करें अर्थात् हमारा आहार विचार, व्यवहार तथा आाचार सब सत्य पर आधारित हो। यज्ञ, दान, तप तथा सत्य को जीवन का आधार बनाना चाहिए। पक्षपात, अन्याय, असत्य का परित्याग करके सब मनुष्यों के साथ धर्मानुसार बर्ताव करना तथा सत्य-धर्म और सत्य-विद्या की वृद्धि करना आदि व्यवहार ही परमात्मा की आज्ञा पालन करना है।

(समानेन वो हविषा जुहोमि) तुम्हारा लेन देन का सब व्यवहार धर्मयुक्त हो। परमात्मा हमारा सत्य के साथ संयोग करके उपदेश देते हैं कि 'सत्य' ही धर्म है, इसके अनुसार ही सदैव चलते रहो। यही परमात्मा की आज्ञा है इसी पर चलने से ही उसकी कृपा प्राप्त होती है।

गुणों से भरपूर है पत्ता गोभी

●पत्तागोभी की प्रकृति ठंडी होती है।

●पत्ता गोभी में दूध के बराबर कैल्शियम पाया जाता है जो हड्डियों को मजबूत करता है। गोभी का बीज उत्तेजक, पाचन शक्ति को बढ़ाने वाला और पेट के कीड़ों को नष्ट करने वाला है।

●पत्ता गोभी की जड़, पत्ती, तना, फल और फूल को चावल के पानी में पकाकर सुबह-शाम लेने से पेट का दर्द ठीक हो जाता है।

●पत्ता गोभी खाने से और इसका रस पीने से खून की खराबी दूर होती है और खून साफ होता है।

●पत्ता गोभी के रस को गाजर के रस में बराबर मात्रा में मिलाकर पीने से हड्डियों का दर्द दूर होता है।

●जंगली गोभी का रस निकालकर, उसमें काली मिर्च और मिश्री मिलाकर पीने से बवासीर के मस्सों से खून निकलना बंद हो जाता है।

●पेशाब में जलन होने पर गोभी का काढ़ा बनाकर रोगी को पिलाइए। इससे तुरंत आराम मिलता है।

●गले में सूजन होने पर गोभी के पत्तों का रस निकालकर दो चम्मच पानी मिलाकर खाने से फायदा होता है।

●पत्ता गोभी के कच्चे पत्ते 50 ग्राम नित्य खाने से पायरिया व दाँतों के अन्य रोगों में लाभ होता है।

●पत्तागोभी में सेल्युलोस नामक तत्व मौजूद होता है जो हमें स्वस्थ रखने में सहायक है। यह तत्व शरीर से कोलेस्ट्रोल की मात्रा को कम करता है। इसे मधुमेह के रोगियों के लिए विशेष लाभकारी माना जाता है। यह खांसी, पित्त व रक्त विकार में भी लाभकारी है।

बाल गिरना : पत्तागोभी के 50 ग्राम पत्ते प्रतिदिन खाने से बाल गिरना बंद हो जाता है।

घाव : इसका रस पीने से घाव ठीक होते हैं। इसके रस का आधा गिलास 5 बार पानी मिलाकर पीना चाहिए। घाव पर इसके रस की पट्टी बाँधें।

कैंसर : बंदगोभी में ऐसे तत्त्व होते हैं जो कैंसर की रोकथाम करने और उसे होने से बचाने में मदद करते हैं। इसमें डिनडॉलीमेथेन (डीआईएम), सिनीग्रिन, ल्यूपेल, सल्फोरेन और इंडोल 3 कार्बीनॉल (13 सी) जैसे लाभदायक तत्त्व होते हैं। ये सभी कैंसर से बचाव करने में सहायक होते हैं। सुबह खाली पेट पत्तागोभी का कम से कम आधा कप रस रोजाना पीने से आरम्भिक अवस्था में कैंसर, बड़ी आंत का प्रवाह (बहना) ठीक हो जाता है।

●इसमें विटामिन सी भरपूर मात्रा में होता है जिससे इम्यूनिटी सिस्टम मजबूत होता है।

●यह अमीनो एसिड में सबसे समृद्ध होता है जो सूजन आदि को कम करता है।

●इसके लगातार सेवन से शरीर में बीटा केराटिन बढ़ जाता है, जिससे आंखें सही रहती हैं।

●पत्ता गोभी पेप्टिक अल्सर के इलाज में सहायक होती है। क्योंकि इसमें ग्लूटामाइन होता है जो अल्सर विरोधी है।

●इसके सेवन से वजन को भी कम किया जा सकता है। एक कप पकाई बंदगोभी में सिर्फ 33 कैलोरी होती है। बंदगोभी का सूप शरीर को ऊर्जा देता है लेकिन वसा की मात्रा को घटा देता है।

●पत्ता गोभी में एंटी-ऑक्सीडेंट होते हैं जो त्वचा की सही देखभाल करने के लिए पर्याप्त होते हैं।

●पत्ता गोभी में लैक्टिक एसिड काफी मात्रा में होती है जो मांसपेशियों के चोटिल होने और उसे रिकवर करने में सहायक होती है।

●इसमे बहुत ज्यादा रेशा होता है जिसकी वजह से पाचन क्रिया अच्छे से होती है और पेट ठीक रहता है। कब्ज की

समस्या से छुटकारा मिलता है।

●नींद की कमी, पथरी और मूत्र की रुकावट में पत्तागोभी लाभदायक है।

●अनिद्रा में पत्तागोभी की सब्जी तथा रात को सोने से एक घंटा पहले 5 चम्मच रस पीने से खूब नींद आती है।

●सल्फर, क्लोरीन तथा आयोडीन साथ में मिल कर आँतों और आमाशय की म्यूकस परत को साफ करने में मदद करते हैं। इसके लिए कच्चे पत्तागोभी को नमक लगा कर खाना चाहिए।

●छाले, घाव, फोड़े-फुंसी तथा चकत्तों जैसी परेशानियों में पत्तागोभी के पत्तों की पट्टी लगाने से बहुत आराम मिलता है। इस काम के लिए पत्तागोभी की बाहरी मोटी पत्तियाँ बेहतर रहती हैं। पूरी साबुत पत्तियों को ही पट्टी की तरह काम में लेना चाहिए। इसकी पट्टी बनाने के लिए पत्तियों को गरम पानी से बहुत अच्छी तरह धोकर तौलिये से अच्छी तरह सुखाकर बेलन से बेलते हुए नरम कर लेना चाहिए। इसकी मोटी, उभरी हुई नसों को निकाल कर बेलने से यह नरम हो जाएगा। फिर इसे गरम करके घाव पर समान रूप से लगाना चाहिए। इन पत्तियों को सूती कपड़े में या मुलायम ऊनी कपड़े में डाल कर काम में ले सकते हैं। इससे पूरे दिन भर के लिए या रात भर सिकाई कर सकते हैं। जले हुए पत्तागोभी की राख भी त्वचा की बहुत सी बीमारियों में आराम पहुँचाता है।

●पत्तागोभी का रस पेट में गैस कर सकता है जिसके कारण बदहजमी हो सकती है। इसलिए सलाह दी जाती है कि पत्तागोभी के रस में थोड़ी सी गाजर का रस मिला कर पीना चाहिए। इससे पेट में गैस या अन्य समस्याएँ नहीं होंगी। पका हुआ पत्तागोभी या पत्तागोभी की सब्जी खाने से भी यदि तकलीफ हो तो इसमे थोड़ी हींग मिला कर पकाएँ। कच्चा खाने से यह जल्दी हजम होती है।

●जर्मन पद्धति के अनुसार पत्तागोभी को काटकर उसमें नमक लगाकर उसे खट्टा होने के लिए रख दिया जाता है। इस विधि से तैयार पत्तागोभी को 'सोर क्राउट' के नाम से जाना जाता है। 'सोर क्राउट' में प्रचुर मात्रा में विटामिन पाए जाते हैं। हृदय रोगों को दूर करने के लिए सोर क्राउट का प्रयोग काफी लाभदायक है।

अर्श रोग (बवासीर)

❑श्रद्धेय आचार्य बालकृष्ण जी महाराज

बवासीर गुदा मार्ग की बीमारी है। यह मुख्यत: दो प्रकार की होती है- खूनी बवासीर और बादी बवासीर। इस रोग के होने का मुख्य कारण 'कोष्ठबद्धता' या 'कब्ज़' है। कब्ज़ के कारण मल अधिक शुष्क व कठोर हो जाता है और मल निस्तारण हेतु अधिक जोर लगाने के कारण बवासीर रोग हो जाता है। यदि मल के साथ बूंद-बूंद कर खून आए तो उसे खूनी तथा यदि मलद्वार पर अथवा मलद्वार में सूजन मटर या अंगूर के दाने के समान हो और मल के साथ खून न आए तो उसे बादी बवासीर कहते हैं। अर्श रोग में मस्सों में सूजन तथा जलन होने पर रोगी को अधिक पीड़ा होती है।

बवासीर का विभिन्न औषधियों द्वारा उपचार--

1. जीरा- एक ग्राम तथा पिप्पली का चूर्ण आधा ग्राम को सेंधा नमक मिलाकर छाछ के साथ प्रतिदिन सुबह-शाम पीने से बवासीर ठीक होती है।

2. जामुन की गुठली और आम की गुठली के अंदर का भाग सुखाकर इसको मिलाकर चूर्ण बना लें। इस चूर्ण को एक चम्मच की मात्रा में हल्के गर्म पानी या छाछ के साथ सेवन करने से खूनी बवासीर में लाभ होता है द्य

3. पके अमरुद खाने से पेट की कब्ज़ दूर होती है और बवासीर रोग ठीक होता है।

4. बेल की गिरी के चूर्ण में बराबर मात्रा में मिश्री मिलाकर, 4 ग्राम की मात्रा में पानी के साथ सेवन करने से खूनी बवासीर में लाभ मिलता है।

5. खूनी बवासीर में देसी गुलाब के तीन ताज़ा फूलों को मिश्री मिलाकर सेवन करने से आराम आता है।

6 . जीरा और मिश्री मिलाकर पीस लें। इसे पानी के साथ खाने से बवासीर के दर्द में आराम रहता है।

7. चौथाई चम्मच दालचीनी चूर्ण एक चम्मच शहद में मिलाकर प्रतिदिन एक बार लेना चाहिए। इससे बवासीर नष्ट हो जाती है।

जानते हो!

–आदित्य आर्य

❖तितली अपने पैरों से स्वाद का पता लगाती है।
❖केवल मादा मच्छर ही खून चूसती है, नर मच्छर केवल आवाजें करते हैं।
❖सन 1894 में पहला कैमरा बना था, उससे फोटो खिंचवाने के लिए उसके आगे आठ घंटे बैठना पड़ता था।
❖ऑक्टोपस के तीन दिल होते हैं।
❖पेड़ अपनी दस प्रतिशत खुराक मिट्टी से जबकि 90 प्रतिशत खुराक हवा से लेते हैं।
❖केलिफोर्निया का जनरल शर्मेन नामक वृक्ष दुनिया का सबसे बड़ा वृक्ष है। यह 85 मीटर लम्बा और इसका वजन 2030 टन है।
❖गाय सीढ़ियाँ चढ़ सकती है, लेकिन उतर नहीं सकती।
❖अंतरिक्ष में आप डकार नहीं ले सकते।
❖वाशिंगटन में हर उन्नीसवाँ व्यक्ति वकील है।
❖प्राय: सपने नींद के आखिरी ५ से २० मिनट में आते हैं।

हास्यम्

✺आस्था गुड्डू

♦पति जोर-जोर से अखबार पढ़ रहा था-'प्रधानमंत्री ने कहा है कि मिलावट करने वालों को सख्त सजा दी जाएगी।'
पत्नी-(घबराकर) श्श-- किसी को बताना मत-- मैंने आलू मटर मिलाकर बनाए हैं।

♦एक दोस्त- कभी तुम औरतों जैसी बातें करने लगते हो, कभी आदमियों जैसी!
दूसरा-मैं क्या करूँ यार! जेनेटिक प्रोब्लम है। मेरे आधे पूर्वज आदमी थे और आधे औरत थे।

♦दो चींटी बैठी थी। पास से एक हाथी गुजरा। एक चींटी बोली- टांग अड़ा कर गिरा दूँ!
दूसरी बोली- जाने दे ना यार! बेचारा अकेला है।

♦डॉक्टर मरीज की जांच करते हुए- आप शराब पीते हैं?
मरीज- आप बेकार में तकलीफ कर रहे हैं, मैं खा पीकर आया हूँ।

♦यात्री- (रिक्शे वाले से) भैया लाल किले का क्या लोगे?
रिक्शे वाला- माफ कीजिये, मैं लाल किला नहीं बेचता।

♦आस्था - हवाई जहाज से कोलकाता जा रही हूँ, तुम्हारे लिए कुछ लेती आऊँ?
आदित्य- हाँ, कल मेरी पतंग उड़ गई थी आकाश में मिले तो लेती आना।

♦अनु- नये कपड़े पहनकर जाता हूँ तो सब्जी वाला महंगी सब्जी देता हूँ, पुराना कुरता पहनकर जाता हूँ तो सस्ती।
मन्नु- अबकी बार कटोरा लेकर जाना, सब्जी मुफ्त दे देगा।

बाल वाटिका

सम्पादक : सुमेधा

प्रहेलिका:

♦रंग बिरंगा गोल शरीर, करता हमेशा हवा से बात।
भोजन उसका बड़ा निराला, खाता हरदम सब की लात।।

♦मेरे नाम के दो हैं मतलब, दोनों का अर्थ निराला।
एक अर्थ में सब्जी हूँ मैं, एक अर्थ में पालने वाला।।

♦सफेद हूँ पर दूध नहीं, ठंडी हूँ पर बर्फ नहीं,
मीठी हूँ पर चीनी नहीं, बताओ मैं कौन हूँ?

♦करे नाक से अपना काम, बतलाओ तुम उसका नाम!

♦अन्त कटे तो आज नहीं, मध्य कटे तो ज्यादा नहीं।
लिख सकते हो मेरा नाम, पढ़े लिखों को मेरा प्रणाम।।

♦छोटा छुपा प्रभात में, बड़ा सो गया रात में।।

♦सरपट दौड़े हाथ न आए, घड़ियाँ उसका नाम बताए।

बाल, बालक, चाँदनी, हाथी, कलम, चांद सूरज, समय

विचार कणिका:

❐प्रतिभा आर्या

◆जाने हुए के अनुसार न मानना और माने हुए के अनुसार आचरण न करना ही अविवेक है।
◆सार्थक काम को पूरा करने से और निरर्थक कार्य का त्याग करने से मन काबू में हो जाता है।
◆बुराई का चिन्तन करने से बुराई और भलाई का चिन्तन करने से भलाई अपने आप आ जाती है।
◆सत्य बोलने और सत्य व्यवहार करने से मन शुद्ध हो जाता है।
◆आनन्द और सुख ऐसे इत्र हैं, जिन्हें जितना अधिक दूसरों पर छिड़केंगे, उतनी ही सुगन्धि आपके भीतर आएगी।
◆ईश्वर ने हमें दो कान दिए और दो आँखें, परन्तु जबान केवल एक ही, ताकि हम बहुत ज्यादा सुनें, बहुत ज्यादा देखें, लेकिन बोलें कम, बहुत कम।
◆जो मरने से डरता है वह जीने से भी डरता है। जीने का मूल्य वही पहचानते हैं, जिन्हें मरना आता है।

प्रेरक कथाएँ

सही चुनाव

रसायनशास्त्री नागार्जुन एक राज्य के राजवैद्य थे। एक दिन उन्होंने राजा से कहा, 'मुझे एक सहायक की जरूरत है।' राजा ने उनके पास दो कुशल युवकों को भेजा और कहा कि उनमें से जो ज्यादा योग्य लगे उसे रख लें। नागार्जुन ने दोनों की कई तरह से परीक्षा ली पर दोनों की योग्यता एक जैसी थी। नागार्जुन दुविधा में पड़ गए कि आखिर किसे रखें।

अंत में उन्होंने दोनों युवकों को एक पदार्थ दिया और कहा- 'इसे पहचान कर कोई भी एक रसायन अपनी इच्छानुसार बनाकर ले आओ। हां, तुम दोनों सीधे न जाकर राजमार्ग के रास्ते से जाना।' दोनों राजमार्ग से होकर अपने-अपने घर चले गए। दूसरे दिन दोनों युवक आए। उनमें से एक युवक रसायन बना कर लाया था जबकि दूसरा खाली हाथ आया था। आचार्य ने रसायन की जांच की। उसे बनाने वाले युवक से उसके गुण-दोष पूछे। रसायन में कोई कमी नहीं थी। आचार्य ने दूसरे युवक से पूछा- 'तुम रसायन क्यों नहीं लाए?' उस युवक ने कहा- 'मैं पहचान तो गया था मगर उसका कोई रसायन मैं तैयार नहीं कर सका। जब मैं राजमार्ग से जा रहा था तो देखा कि एक पेड़ के नीचे एक बीमार और अशक्त आदमी दर्द से तड़प रहा है। मैं उसे अपने घर ले आया और उसी की सेवा में इतना उलझ गया कि रसायन तैयार करने का समय ही नहीं मिला।' नागार्जुन ने उसे अपना सहायक रख लिया।

दूसरे दिन राजा ने नागार्जुन से पूछा- 'आचार्य! जिसने रसायन नहीं बनाया उसे ही आपने रख लिया। ऐसा क्यों? नागार्जुन ने कहा- 'महाराज दोनों एक रास्ते से गए थे। एक ने बीमार को देखा और दूसरे ने उसे अनदेखा कर दिया। रसायन बनाना कोई जटिल कार्य नहीं था। मुझे तो यह जानना था कि दोनों में कौन मानव सेवा करने में समर्थ है। बीमार व्यक्ति चिकित्सक की दवा से ज्यादा उसके स्नेह और सेवा भावना से ठीक होता है, इसलिए मेरे काम का व्यक्ति वही है जिसे मैंने चुना है।'

फेसबुक से प्रस्तुति : **आर्य नरेन्द्र सोनी**

क्या याद रखो

एक बार दो मित्र रेगिस्तान में जा रहे थे। रास्ते में दोनों में तू-तू, मैं-मैं हो गई। बात इतनी बढ़ गई कि एक मित्र ने दूसरे को थप्पड़ जमा दिया। जिसे थप्पड़ पड़ा वह झुका और वहाँ बालू पर लिख दिया- 'आज मेरे मित्र ने मुझे थप्पड़ मारा।' दोनों मित्र चलते रहे। रास्ते में तालाब देखकर उन्होंने नहाने का निर्णय लिया। जिस मित्र को झापड़ पड़ा था, वह दलदल में फँस गया, किंतु उसके मित्र ने उसे बचा लिया। उसने एक पत्थर पर लिखा, 'आज मेरे निकटतम मित्र ने मेरी जान बचाई।'

जिसने उसे थप्पड़ मारा और जान बचाई, उसने पूछा- 'जब मैंने तुम्हें मारा तो तुमने रेत में लिखा और जब मैंने तुम्हारी जान बचाई तो तुमने पत्थर पर लिखा, ऐसा क्यों?'

मित्र ने कहा- 'जब कोई हमारा दिल दुखाये, तो हमें बालू में लिखना चाहिए क्योंकि उसको भुला देना ही अच्छा है। क्षमा रुपी वायु एवं जल शीघ्र ही उसे मिटा देगा। किंतु जब कोई अच्छा करे, उपकार करे तो हमें उस अनुभव को पत्थर पर लिखना चाहिए जिससे कि कोई भी उसे मिटा न सके, वह हमें हमेशा याद रहे।

मित्रो, जिंदगी है तो अच्छे-बुरे अनुभव तो होते रहेगें। महत्त्वपूर्ण यह है कि हम क्या याद रखते हैं, और क्या भूल जाते हैं?

यह भी जानो — आस्था

- ♦कार का आविष्कार हेनरी फोर्ड ने किया था।
- ♦सूर्य का तापमान लगभग ६ हजार डिग्री सैंटीग्रेड है।
- ♦पिन कोड का अर्थ है- Postal Index Number Code, यह छः अंकों का होता है।
- ♦वायुमण्डल में आक्सीजन की मात्रा 20.94 प्रतिशत है।
- ♦सोडियम पानी के सम्पर्क में आने पर आग पकड़ लेता है।
- ♦मुद्रा के लिए 'रूपया' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम शेरशाह सूरी के शासन काल में १५४० ई० में हुआ था।
- ♦नागपुर को संतरों का शहर कहा जाता है।
- ♦पीपल सबसे अधिक आक्सीजन छोड़ने वाला वृक्ष है।

छोटी कहानियाँ

प्रतिष्ठा

एक राजा को कविता सुनने का बहुत शौक था और वह समय समय पर कवियों को बुलाकर पुरस्कृत भी करता रहता था। एक दिन एक कवि ने राजा की प्रशंसा में एक कविता लिखी और भरे दरबार में उसे सुनाया। सभी ने कविता की प्रशंसा की। राजा भी कविता सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ। बोला– बोलो, तुम्हें क्या पुरस्कार दूँ!

कवि ने कहा– एक लाख मुद्राएँ दे दीजिये।

राजा– ये तो बहुत ज्यादा हैं। कम से कम बताओ।

कवि ने कहा– तो सौ मोहरें दे दीजिये।

राजा चकित होकर बोला– तुमने दोनों राशियों में इतना अन्तर क्यों रखा?

कवि ने कहा –'जब आपने मुझसे पूछा कि क्या लोगे तो मैंने आपकी प्रतिष्ठा का विचार कर मांगा। जब आपने उसे घटाने के लिए कहा तो मैंने अपनी हैसियत देखी––'

राजा मुस्करा दिया।

'अच्छा तो हम अपनी प्रतिष्ठा को कम न होने देंगे।' और उसने कवि को एक लाख मुद्राएँ दे दीं।

कल का भरोसा

धर्मराज युधिष्ठिर के पास कोई ब्राह्मण सहायता मांगने आया। महाराज उस समय किसी कार्य में अत्यंत व्यस्त थे। उन्होंने नम्रतापूर्वक ब्राह्मण को कह दिया– महाराज! आप कल दर्शन दें, आप जो चाहेंगे, दे दिया जाएगा।

ब्राह्मण तो चला गया, किन्तु भीमसेन ने उठकर राजद्वार पर रखी दुंदुभि को बजाना शुरु कर दिया। उन्होंने सेवकों को भी मंगलवाद्य बजाने की आज्ञा दे दी। धर्मराज ने असमय मंगलवाद्य बजते देखकर पूछा– क्या कारण है? वाद्य बजाने की आज्ञा किसने दी है? सेवकों ने बताया कि भीमसेन ने यह आज्ञा दी है। भीम बुलाए गए। कारण पूछने पर वे बोले– महाराज ने काल को जीत लिया, इससे बड़ा मंगल का समय और क्या हो सकता है?

मैंने काल को जीत लिया? युधिष्ठिर चकित हुए। भीम ने स्पष्ट किया– महाराज विश्व मानता है कि धर्मराज युधिष्ठिर के मुंह से हंसी में भी झूठी बात नहीं निकलती। आपने याचक ब्राह्मण को अभीष्ट दान कल देने को कहा है। इसलिए कम से कम कल तक तो अवश्य ही काल पर आपका अधिकार हो गया होगा!

अब धर्मराज को अपनी भूल का ज्ञान हुआ। वे बोले भाई भीमसेन! आज तुमने मुझे अच्छा सावधान किया। पुण्य कार्य तत्काल करना चाहिए। उसे कल के लिए टालना भारी भूल है। उन ब्राह्मण देवता को अभी बुलाओ, जिससे उसे अभीष्ट दान अभी दे सकूँ। न जाने कल क्या होगा!

और ब्राह्मण को यथेष्ट दान देकर सत्कारपूर्वक विदा कर दिया गया। आज करने योग्य कार्य कल पर नहीं छोड़ना चाहिए।

लेखक का जन्म

अंग्रजी के एक प्रसिद्ध लेखक चार्ल्स डिकेंस पहले एक गोदाम में मजदूरी करते थे। उन्हें पढ़ने के साथ साथ लिखने का भी शौक था। वे रातों को लेख लिखते और चोरी छिपे अखबारों में छपने के लिए भेजते थे। उनके अधिकतर लेख प्रायः धन्यवाद सहित वापस आ जाते थे। उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और मेहनत मजदूरी के साथ साथ अपने अच्छे शौक के लिए समय निकालते रहे।

इसी बीच एक सम्पादक ने उनके पास पत्र लिखा– आप की रचनाएँ अच्छी हैं आप भविष्य में अवश्य एक सफल लेखक बनेंगे। सम्पादक के इन शब्दों से चार्ल्स डिकेंस को नई शक्ति मिली। उनके संकल्प को बल मिला और वे लगातार लिखते रहे। एक दिन उन्हें नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

लाख टके की बात

रामसेवक शर्मा

लाख टके की बात समझना आपस में।

आसमान में इतने तारे।
कब लड़ते बोलो बेचारे?
सदा चमकते सदा दमकते–
सबको ही लगते हैं प्यारे।।
देख ध्यान से इन्हें परखना आपस में।।

सूरज जो दिनभर चलता है,
औरों के हित जो जलता है।
अन्न फूल फल उपजा उपजा–
जन जीवन को जो फलता है।।
पाठ नया मिलकर नित पढ़ना आपस में।।

जो अच्छे बच्चे होते हैं।
क्षण वे व्यर्थ नहीं खाते हैं।
कीमत सही समय की समझें–
जीवन में खुशियाँ बोते हैं।।
कभी न लड़ना और झगड़ना आपस में।।

अंधविश्वास : एक हास्य कथा

गधे की मजार

❑ममता

एक फकीर किसी बंजारे की सेवा से बहुत प्रसन्न हो गया और उस बंजारे को उसने एक गधा भेंट किया। बंजारा बड़ा प्रसन्न था गधे के साथ। अब उसे पैदल यात्रा न करनी पड़ती थी। सामान भी अपने कंधे पर न ढोना पड़ता था। और गधा बड़ा स्वामीभक्त था।

एक यात्रा पर गधा अचानक बीमार पडा और मर गया। रो धोकर उसने उसे जमीन में दबा दिया और उसके सम्मान में मिट्टी से उसकी समाधि बना दी व उसके पास बैठकर रोने लगा। कुछ देर में एक राहगीर वहाँ से गुजरा। उस राहगीर ने सोचा कि जरूर किसी महान आत्मा की मृत्यु हो गयी है। वह झुका समाधि के पास। इसके पहले कि बंजारा कुछ कहे, उसने कुछ रूपये उस पर चढ़ा दिए। बंजारे को हंसी भी आई आयी। लेकिन उस भले आदमी की आस्था को ठेस पहुंचाना भी उचित नहीं समझा। और उसे यह भी समझ में आ गया कि यह बड़ा उपयोगी व्यवसाय हो सकता है।

वह उसी स्थान पर बैठकर रोता, यही उसका धंधा हो गया। गांव-गांव खबर फैल गयी कि किसी महान आत्मा की मृत्यु हो गयी। लोग आते और वहाँ कुठछ न कुछ भेंट पूजा चढ़ा कर चले जाते। देखते देखते वह स्थान किसी पहुंचे हुए फकीर की समाधि बन गया। ऐसे ही कई वर्ष बीत गए। वह बंजारा बहुत धनी हो गया।

फिर एक दिन जिस फकीर ने उसे यह गधा भेंट किया था, वह भी यात्रा पर था और उस गांव के करीब से गुजरा। उसे भी लोगों ने कहा- 'एक महान आत्मा की समाधि है यहाँ, दर्शन किये बिना मत चले जाना।'

वह गया, उसने उसी बंजारे को बैठे देखा। उसे आश्चर्य हुआ। पूछा- 'किसकी समाधि है यहाँ? और तू यहाँ बैठा क्यों रो रहा है?'

उस बंजारे ने कहा- 'अब आप से क्या छिपाना? जो गधा आप ने दिया था, उसी की समाधि है। जीते जी भी उसने मेरा बड़ा साथ दिया और मर कर तो उसने मेरे सारे दु:ख दूर कर दिए हैं।'

सुनते ही फकीर खिलखिला कर हंसने लगा। उस बंजारे ने पूछा- 'आप हँसे क्यों?'

फकीर ने कहा- 'तुम्हें पता है? जिस गाँव में मैं रहता हूँ वहाँ भी एक पहुंचे हुए महात्मा की समाधि है। उसी से तो मेरा काम चलता है।'

बंजारे ने पूछा- 'वह किस महात्मा की समाधि है?'

फकीर ने जवाब दिया- 'वह इसी गधे की माँ की समाधि है।'

आस्था के नाम पर अंधविश्वास और भेड़चाल का यह नमूना है। जो भेड़चाल एक बार चल पड़ी, उसे हटाना मुश्किल हो जाता है। भगवान के नाम पर कबरों, मजारों, समाधियों की पूजा के पीछे प्राय: इसी प्रकार का सच होता है। बहुत से लोगों को पता भी नहीं होता कि यहाँ कौन दबाया गया था? और पता भी हो तो उसके ऊपर चादर फूल या अन्य कुछ भी पदार्थ चढ़ाना तो किसी प्रकार से उचित नहीं ठहराया जा सकता। एक मरा हुआ आदमी किसी की मनोकामनाएँ कैसे पूरी कर सकता है?

राम दुहाई

एक अकड़ता चूहा आया,
सब चूहों पर रौब जमाया।
बोला- मैं लन्दन में पढ़ता।
ऊँच नीच का भेद न करता।
जूडो और कराटे सीखा।
सबको देता उत्तर तीखा।

कुत्ता बिल्ली कोई आए
मुझे देखकर ठहर न पाए।
पर ज्यों बिल्ली आती देखी।
भूल गया वह सारी शेखी।
झटपट भागा जान बचाई।
मन में बोला- राम दुहाई।।

मदन लाल

भजनावली

बिना वेद नहीं मिला भेद

❒स्व० श्री वीरेन्द्र 'वीर'

बिना वेद नहीं मिला भेद उस जगदाधार खिलारी का।
इधर उधर फिर नाश करै क्यों मूरख आयु सारी का।।

वेदों की मर्याद छोड़कर अब तक कष्ट उठाए हैं।
काशी और हरिद्वार द्वारका मथुरा धक्के खाए हैं।।
हुई सभ्यता नष्ट उतर के शिखर से नीचे आए हैं।
कभी आर्य कहलाते थे पर अब हम कुली कहाए हैं।।
हुआ पतन बिन वेद वतन से रतन गया सरदारी का।।१।।

पूर्ण रीति से जिस व्यक्ति ने वेदों को पहचान लिया।
निराकार अन्तर्यामी को उस व्यक्ति ने जान लिया।।
प्रकाश हुआ उसके मन में उसने ही जान विज्ञान लिया।
राजा और महाराजाओं ने गुरु उसी को मान लिया।।
बिना वेद कल्याण नहीं हो कभी किसी नरनारी का।।२।।

मैक्समूलर जर्मन से यहाँ वेद पढ़ने को आया था।
पढ़े वेद फिर गया देश को वहाँ प्रकाश फैलाया था।।
अपनी भूली संस्कृति को भली भाँति समझाया था।।
जर्मन के बच्चे बच्चे ने उसको शीश झुकाया था।।
इसी वजह से नाम हुआ था हर हिटलर बलकारी का।।३।।

पढ़ो वेद तुम आप दूसरों को भी रोज पढ़ाते रहो।
तनमनधन सब कुछ अपना इस ही के लिए लगाते रहो।।
स्वामीजी की तरह वेद प्रचार में उमर गँवाते रहो।
गौतम कपिल कणाद आदि से ज्ञानी गुरु बनाते रहो।।
'वीरेन्द्र' मुक्ति का साधन होगा वेद तुम्हारी का।।४।।

कर्म किया फल पड़े भुगतना

❒श्रीपाल आर्योपदेशक वैदिक मिशनरी

कर्म किया फल पड़े भुगतना रस्ता पकड़ भलाई का।
दो दिन की जिंदगानी जग में मत कर काम बुराई का।।

राम कृष्ण का आज तलक कहो किस कारण से नाम रहा।
परोपकार हित इन दोनों का जीवन सुनो तमाम रहा।
कर्ण पर्ण से नहीं टरा था जब तक हड्डी चाम रहा।
संध्या यज्ञ दान आदि वह करता प्रातः शाम रहा।।
शूर्पणखा रह गई छली सी पा उत्तर रघुराई का।।१।।

हर मानव को पूर्व कर्म के विचार अवश्य करना चाहिए।
लोक और परलोक समझकर अपयश से डरना चाहिए।
वचन दे दिया कभी किसी को ना किञ्चित् टरना चाहिए।
मौत भले ही आ जावे पर हंस हंस कर मरना चाहिए।।
मर कर भी वे अमर कहाते पद ऊँचा सच्चाई का।।२।।

धर्म से जो प्रतिकूल चले उन्होंने कष्ट उठाए कि ना।
हर तरियां से तंग हुए मरे भूखे और तिसाए कि ना।
शिशुपाल दुर्योधन खपगे कुकर्म आगे आए कि ना।।
अन्त समय में बदी करणिये कर मल-२ पछताए कि ना।
भाई ने खुद खून बहा दिया अपने हाथों भाई का।।३।।

सज्जन की तो पहचान यही वे बलती आग बुझाया करैं।
अपने को दुःख देकर भी औरों को सुख पहुंचाया करैं।
परधन परत्रिया को देखकर ना भाव दूसरे लाया करैं।
इस पार रहैं या उस पार रहैं ना गोते धार में खाया करैं।।
'श्रीपाल' क्या जाने मूरख सार यार कविताई का।।४।।

नरेश सिहाग 'एडवोकेट' को सम्मान

सरिता लोक सेवा संस्थान, सुलतानपुर (उ० प्र०) द्वारा नरेश सिहाग एडवोकेट को साहित्य सेवा, हिन्दी भाषा के प्रचार प्रसार में उल्लेखनीय योगदान के लिए स्व० दयावन्ती बनारसीलाल सदेवरा सम्मान देने की घोषणा की गई है। शांतिधर्मी परिवार की ओर से नरेश सिहाग को हार्दिक बधाई व शुभकामनाएँ।

आर्यसमाज जींद शहर में हुआ वेदप्रचार

आर्यसमाज जींद शहर के तत्त्वावधान में तीन दिवसीय वेदप्रचार २१ से २३ नवम्बर तक सम्पन्न हुआ। ओजस्वी एवं प्रखर वक्ता आचार्य उषर्बुध जी (राज०) एवं उदीयमान भजनोपदेशक जसविन्दर जी (करनाल) के प्रवचनों और भजनों से श्रोताओं ने श्रद्धापूर्वक धर्मलाभ प्राप्त किया। समाज के मंत्री श्री राजवीर आर्य ने कार्यक्रम का संचालन किया। नगर के गणमान्य व्यक्ति व विभिन्न समाजों के सदस्यगण भी उपस्थित थे। समाज के प्रधान श्री अशोक गुलाटी ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया।

–जयन्त आर्य

प्रो० उमाकान्त उपाध्याय का महाप्रयाण एक अपूरणीय क्षति

उपाध्याय जी से मेरा आधी सदी से अधिक सम्पर्क और स्नेह संबंध रहा। वे सुलतानपुर जिले के एक संस्कारी ब्राह्मण परिवार में जन्मे थे। वैदिक कर्मकाण्ड के प्रति उनका विशेष आकर्षण रहा। कोलकाता आर्यसमाज के वार्षिक अधिवेशनों में कई दशक तक उन्होंने आचार्य का दायित्त्वपूर्ण कार्य संभाला और अपने मार्गदर्शन में पं० आत्मानन्द, पं० नचिकेता आदि कई नवीन कर्मकाण्डी पण्डितों को प्रशिक्षित किया। यों तो वे अर्थ शास्त्र के प्राध्यापक थे, किन्तु वेद, शास्त्र तथा संस्कृत में उनकी गहरी गति थी। उन्होंने वेद मंत्रों के जैसे लाकोपयोगी अर्थ किए हैं, उनसे वैदिक स्वाध्याय में लागों की रूचि बढ़ी है। अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त का भाष्य इसी कोटि की रचना है। वेदाध्ययन और लेखन में प्रवृत्त होने के अलावा उन्होंने बंगाल आर्यसमाज की गतिविधियों और विकास को लक्ष्य बनाकर कोलकाता आर्यसमाज का इतिहास, आर्यसमाज के विद्वान और शास्त्रार्थ आदि अनेक शोधपरक ग्रंथ लिखे हैं। सत्यार्थप्रकाश दर्पण सत्यार्थप्रकाश से संबंधित जानकारियों का विश्व कोष ही है। उपाध्याय जी बहुभाषा विज्ञ थे। हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत और बंगला में उनकी निर्बाध गति थी। उन्होंने बंगाली ग्रंथ भी लिखे हैं। आधी शताब्दी तक 'आर्यसंसार' का सम्पादन कर उन्होंने एक मानदण्ड स्थापित किया है। लेखन के साथ उन्होंने वाणी द्वारा भी भूमण्डल स्तर पर प्रचार किया है। ऐसे सात्त्विक, समर्पित विद्वान् का निधन एक महती तथा अपूरणीय क्षति है।

डॉ० भवानीलाल भारतीय,
३/५ शंकर कालोनी, श्री गंगानगर, राजस्थान

जींद, आर्यसमाज रामनगर (रोहतक मार्ग) में त्रिदिवसीय वेदामृत महोत्सव ७ से ९ नवम्बर तक सम्पन्न हुआ। वैदिक प्रवक्ता स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती और भजनोपदेशक पं० टीकमसिंह आर्य द्वारा वेदों की शिक्षाओं के आधार पर श्रोताओं का मार्गदर्शन किया गया। कार्यक्रम में विभिन्न आर्यसमाजों के पदाधिकारियों सहित भारी संख्या में नगर के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हुए। (छायाचित्र व विवरण : यज्ञवीर आर्य, प्रैस प्रवक्ता)

आर्यसमाज लोहिया नगर का अभूतपूर्व वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आचार्य आनन्द पुरुषार्थी के ब्रह्मत्त्व में 82 यजमानों ने दी आहुति

आर्यसमाज लोहिया नगर का 84 वाँ वार्षिकोत्सव 8 से 11 नवम्बर तक सम्पन्न हुआ। मुख्य वक्ता आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी, होशंगाबाद, ने कहा कि अध्यात्म की यात्रा में प्रातः काल प्रतिदिन एकांत सेवन नितांत आवश्यक है। अपनी आवश्यकताएं कम करनी हैं और उपलब्ध साधनों का त्याग पूर्वक उपयोग करना है। वेद में 100 से अधिक वर्षो तक अदीनता पूर्वक जीने की कामना है दरिद्र, दास, निरीह दुखी होकर जीने की नहीं, यह पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रिय तीनों ही दृष्टि से है। कोई भी पशु पक्षी जड़ चेतन जगत निठल्ला नहीं है तो बिना उद्यम के भोजन पाप तो है ही रोगोत्पादक भी है। भजनोपदेशक श्री संदीप वैदिक मुज्जफ्फरनगर, सुश्री प्रियंका भारती भरतपुर, श्री राममगन जी गुरुकुल धनपतगंज ने मधुर भजनों व उपदेशों से जनता का मन मोह लिया। 11 नवम्बर को 38 वेदियों पर 82 यजमानों का नयनाभिराम दृश्य उपस्थित था। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य आनंद पुरुषार्थी जी ने यजमानों से आर्यसमाज से लगातार जुड़े रहने की मार्मिक अपील की। रामपुर, सिकरवारी, दोस्तपुर, कैथी, जलालपुर, मालीपुर, शाहगंज, टांडा रामनगर सहित अनेकानेक ग्रामीण अंचलों से आर्यों ने उपस्थिति दर्ज की। श्री विनोद गुप्ता प्रधान आर्यसमाज ने धन्यवाद किया।

–ज्ञानप्रकाश (संजय) आर्य, मंत्री, आर्यसमाज लोहिया नगर, शहजादपुर, जिला अंबेडकरनगर (उत्तर प्रदेश)

गुरुकुल प्रभात आश्रम टीकरी, भोला झाल, मेरठ का

वार्षिकोत्सव

माघ कृष्णा नवमी, २०७१ , १४ जनवरी २०१५

वेद संगोष्ठी, मंगलवार १३ जनवरी, २०१५

कृपया अधिक से अधिक संख्या में पधारकर धर्म लाभ उठावें।

निवेदक

स्वामी विवेकानन्द सरस्वती	विवेक शेखर सर्राफ	आचार्य वाचस्पति
कुलाधिपति	प्रधान	मंत्री (७५९९१५६७८१)

ओ३म्

M- 98968 12152

रवि स्वर्णकार

हमारे यहाँ सोने व चांदी के जेवरात
आर्डर पर तैयार किये जाते हैं।

प्रो. रविन्द्र कुमार आर्य

६, आर्य समाज मंदिर, रेलवे रोड़, जीन्द (हरि०)-१२६१०२

ओ३म्

स्वामी श्रद्धानन्द व रामप्रसाद बिस्मिल बलिदान स्मृति

कन्या भ्रूण हत्या, अंधविश्वास व नशाखोरी के विरुद्ध

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन, जींद (हरयाणा)

दिनांक : १४ दिसम्बर, २०१४, प्रातः १० बजे से

स्थान : महर्षि दयानन्द पार्क, निकट महर्षि दयानन्द योग चिकित्सा आश्रम, 3705, अर्बन एस्टेट, जींद-126102

आप सभी इष्ट मित्रों व परिवार सहित सादर आमन्त्रित हैं।

संयोजक : स्वामी रामवेश, प्रधान नशाबंदी परिषद्

सम्पर्क : 01681-248638, 94161-48278

क्या आपको याद है?

काशी शास्त्रार्थ

❒सहदेव समर्पित

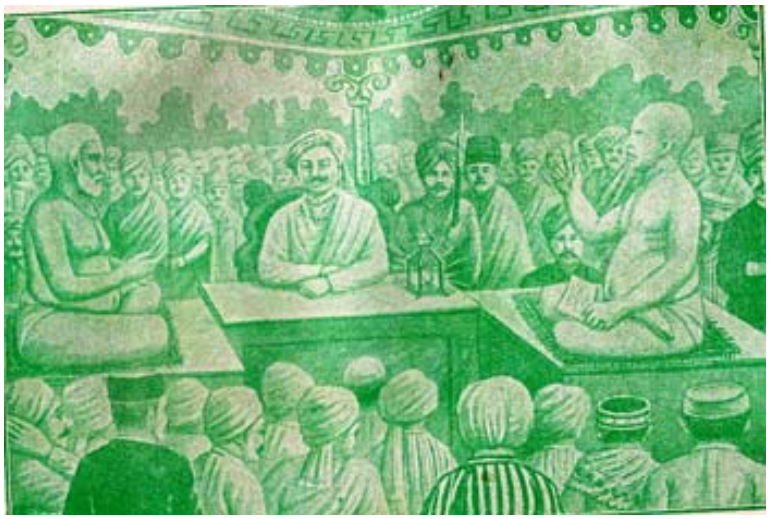

कार्तिक शुक्ला १२ संवत् १९२६!
१६ नवंबर १८६९ ई०!

स्वामी दयानन्द के काशी आगमन और प्रचार से खलबली मच गई। स्वामी जी के बार बार शास्त्रार्थ के लिए आह्वान करने पर वहाँ की पण्डित मण्डली आना कानी करती रही, पर अन्त में काशी नरेश के आग्रह पर तैयार हो गई। सभा का प्रबंध नगर कोतवाल श्री रघुनाथ प्रसाद के अधीन रहा। काशी नरेश के पक्षपात ने प्रबंध को छिन्न भिन्न कर दिया। स्वामी जी के पक्ष के विद्वानों को सभा में आने से रोका गया। स्वामी जी के आग्रह पर उन्हें आने तो दिया गया परन्तु उन्हें पिछली पंक्ति में स्थान दिया गया और समस्त पौराणिक मण्डली स्वामी जी को घेर कर बैठ गई। शास्त्रार्थ क्या था– स्वामी जी को किसी भी तरह परास्त घोषित करने का षड्यंत्र था।

शास्त्रार्थ का विषय था 'वेदों में मूर्ति पूजा है या नहीं।' बहुत देर तक पण्डित मण्डली वेदों में मूर्ति पूजा दिखाने में असफल रही। उन्होंने विषय को बदलने का बार बार प्रयास किया। अब उन्होंने विषय बनाया– वेद में पुराण शब्द है या नहीं! स्वामी जी का मानना था कि वेदों में पुराण शब्द तो है किन्तु उसका अर्थ 'पुराना' है और उसका प्रयोग विशेषण के रूप में हुआ है। अठारह पुराणों का उससे ग्रहण नहीं हो सकता। इस पर माधवाचार्य ने दो पत्रे, जो वास्तव में गृह्य सूत्र के थे, वेद के बताकर दिये। कहा कि यहाँ लिखा है कि यज्ञ के समाप्त होने पर यजमान दसवें दिन पुराणों का पाठ सुने––। यहाँ पुराण शब्द किसका विशेषण है?

शाम हो रही थी। दीपक के प्रकाश में स्वामी जी उस पत्रे को देख ही रहे थे कि विशुद्धानन्द ने कहा कि हमें देर होती है और स्वामी जी की पीठ पर हाथ रखकर बोले– ओहो! हार गये! और यह कहते ही उन्होंने ताली बजाई। दूसरे पण्डितों और काशी नरेश ने भी उनका साथ दिया। 'दयानन्द हार गये।' कहते हुए सब ने हो हल्ला मचा दिया। इस सभा में लगभग पचास हजार लोग उपस्थित थे। गुण्डों द्वारा ढेले फेंक कर उपद्रव भी किया गया, परन्तु कोतवाल स्वामी जी को वहाँ से निकाल ले गये और उनकी रक्षा की। उस समय के 'हिन्दू पेट्रियट' 'रुहेलखण्ड समाचार' 'तत्त्वबोधिनी पत्रिका' 'पायोनियर' आदि समाचार पत्रों ने स्वामी जी की विजय को स्वीकार किया और पण्डित मण्डली के असभ्य व्यवहार की आलोचना की।

उस दिन वेद विद्या का सूर्य देदीप्यमान हुआ। एक ईश्वर विश्वासी, निर्भीक बाल ब्रह्मचारी संन्यासी ने झूठ के किले को धराशायी किया और नरेश के पक्षपात व पण्डितम्मन्यों के अहंकार से विद्यानगरी काशी कलंकित हुई।

स्वामी जी इसके बाद भी एक मास तक काशी रहे और उनको शास्त्रार्थ के लिए ललकारते रहे कि वेदों में मूर्त्तिपूजा सिद्ध कर सकते हो तो बताओ। उसके बाद भी पाँच या छः बार स्वामी जी काशी आए और शास्त्रार्थ का आह्वान किया–– पर वेदों में मूर्त्तिपूजा का विधान होता तभी तो किसी का साहस होता।

(पं० घासीराम कृत जीवन चरित के आधार पर)

सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक चन्द्रभानु आर्य द्वारा अपने स्वामित्व में, ऑटोमैटिक ऑफसैट प्रैस रोहतक से छपवाकर, कार्यालय शान्तिधर्मी ७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक), जीन्द-१२६ १०२ (हरि०) से २४-११-२०१४ को प्रकाशित।

ओ३म्

शांतिधर्मी के सदस्य बनने और शुल्क जमा कराने के लिए मिलें।

प्रकाश मेडिकल हाल

पटियाला चौक, जींद-126102

Regd. No. 108463

हर प्रकार की अंग्रेजी, देसी व आयुर्वेदिक दवाईयाँ
उचित मूल्य पर खरीदने के लिए पधारिए।

Dr. S.P.Saini
(B.Sc. D. Pharma, आयुर्वेद रत्न)

M- 93549 55283
92552 68315

ओ३म्

फोन : 01681-252606 (दु.)
9416545538 (मो.)

सत्यम् स्वर्णकार

हमारे यहाँ सोने व चांदी के जेवरात
आर्डर पर तैयार किये जाते हैं।

प्रो॰ सत्यव्रत आर्य सुपुत्र रमेश चन्द्र आर्य

नजदीक सत्यनारायण मंदिर, सुनार मार्किट,
मेन बाजार, जीन्द (हरि०)-१२६१०२

R.N.I. No. 70866/99 शान्तिधर्मी हिन्दी मासिक (दिसम्बर, २०१४) P.R. No. : PKL 150-A/2014-16

स्थापित-२००६ ओ३म् पंजी. संख्या १२७

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी, बोहल

(शिक्षा, साहित्य एवं जनसेवा को समर्पित एक अग्रणी संस्था)

गुगनराम सोसायटी भवन, २०२-पुराना हाऊसिंग बोर्ड,
भिवानी-१२७०२१ (हरियाणा)

संस्थापक सचिव : नरेश सिहाग 'बोहल' एडवोकेट

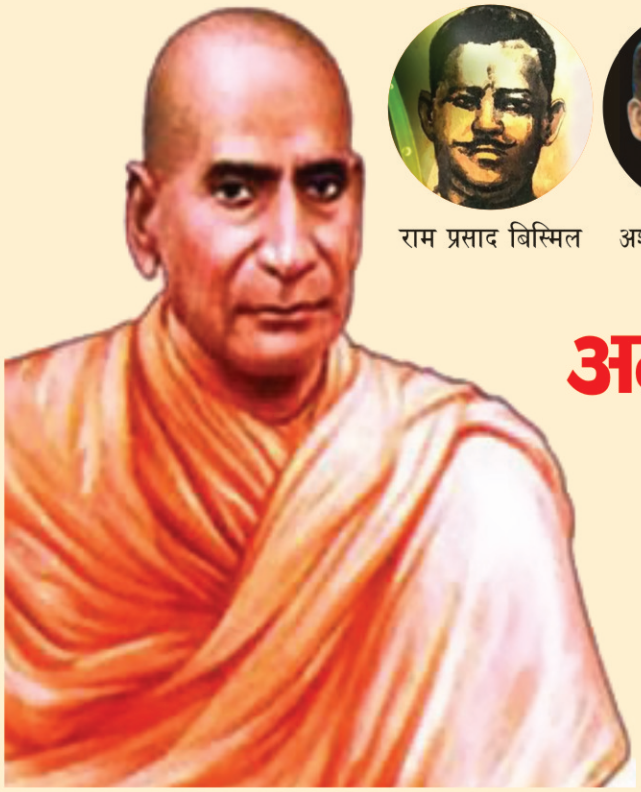

स्वामी श्रद्धानन्द

राम प्रसाद बिस्मिल

अशफाकउल्ला खाँ

रोशन सिंह

राजेन्द्र लाहिड़ी

अमर हुतात्माओं को शत-शत नमन

नरेश सिहाग बोहल
एडवोकेट